प्रारूपों की पुस्तिका

जिला प्रशिक्षण वर्ग

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्रशिक्षण महाभियान 2015

भारतीय जनता पार्टी

प्रारूपों की पुस्तिका

जिला प्रशिक्षण वर्ग

भारतीय जनता पार्टी

प्रशिक्षण महाभियान 2015

11, अशोक रोड, नई दिल्ली– 110001

विषय सूची

1.	भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास	05
2.	सैद्धांतिक अधिष्ठान	20
3.	हमारा विचार परिवार	24
4.	अपनी कार्यपद्धति	28
5.	एकात्म मानववाद	32
6.	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद	37
7.	कार्यकर्ता व्यक्तित्व विकास	44
8.	मीडिया प्रबंधन	46
9.	राजनीतिक कार्यों में सोशल मीडिया का प्रयोग	51
10.	देश के समक्ष चुनौतियां	56
11.	वर्ग गीत	64

आमुख

पं. दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान 2015 के तत्वाधान में राष्ट्रीय, प्रांतीय व सम्भागीय कार्यशालाओं का सांगोपांग आयोजन हुआ। सभी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों का अभिनंदन।

मंडल प्रशिक्षण वर्ग हमारे समक्ष एक बड़ी चुनौती थे। देश के अधिकतम मंडलों तक हम प्रशिक्षण वर्ग कर सक रहे हैं, यह संतोषप्रद एवं उत्साहजनक बात है। लेकिन सभी मंडलों तक पहुंचना अभी भी चुनौती बना हुआ है।

वर्गों के द्वितीय चक्र में हमें जिला प्रशिक्षण वर्ग करने हैं। मण्डल के वर्गों में प्रारूपों का समुचित उपयोग हुआ, विषय–वस्तु के किंचित संवर्धन के साथ जिला प्रशिक्षण वर्गों की यह प्रारूप पुस्तिका आपके हाथों में है। हम क्रमशः विषय वस्तु का विकास एवं विस्तार करेंगे। अस्तु।

पी. मुरलीधर राव
प्रभारी
प्रशिक्षण महाभियान

भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास

- भारत की आजादी के आन्दोलन को द्वि–राष्ट्र के विचार ने प्रदूषित कर दिया था। साम्प्रदायिक पृथकतावाद के तुष्टीकरण एवं राष्ट्रवाद की समुचित दृष्टि न होने के कारण नेताओं ने मजहब के आधार पर भारत का विभाजन स्वीकार कर लिया। विभाजन के सक्रिय विरोध के कारण कांग्रेस सरकार ने महात्मा गांधी की हत्या का झूठा बहाना बना कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित कर दिया।
- डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पूरे बंगाल को पाकिस्तान में मिलाने के खिलाफ आन्दोलन किया। परिणामतः पाकिस्तान को आधा बंगाल ही मिला। महात्मा गांधी की सलाह पर डॉ. मुखर्जी को केन्द्रीय मंत्रीमंडल में शामिल किया गया था, लेकिन पाकिस्तान के साथ भारत की दब्बू नीति एवं वहां के हिन्दुओं की रक्षा में उदासीनता को व्यक्त करनेवाले नेहरू–लियाकत समझौते के खिलाफ डॉ. मुखर्जी ने मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दे दिया।
- इन दो पृष्ठभूमियों ने जनसंघ को जन्म दिया। रा.स्व.संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी (मा.स. गोलवलकर) से डॉ.

मुखर्जी ने भेंट की, तथा जनसंघ के निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी। मई 1951 में यह प्रक्रिया प्रारंभ हुयी तथा 21 अक्टूबर 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अध्यक्षता में अ.भा. जनसंघ की स्थापना के साथ यह पूर्ण हो गयी। दिल्ली के राघोमल कन्या माध्यमिक विद्यालय में यह स्थापना हुयी। आयताकार भगवा ध्वज झण्डे के रूप में स्वीकृत हुआ उसी में अंकित दीपक को चुनाव चिन्ह स्वीकार किया गया, इसी उद्घाटन सत्र में प्रथम आम चुनाव के घोषणापत्र को भी स्वीकृत किया गया।

- प्रथम आम चुनाव में जनसंघ को 3.06 प्रतिशत वोट प्राप्त हुये तथा डॉ. मुखर्जी सहित तीन सांसद चुनाव जीत कर आये। जनसंघ को राष्ट्रीय दल का दर्जा प्राप्त हुआ। सदन में डॉ. मुखर्जी के नेतृत्व में ''नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट' का निर्माण हुआ, अकालीदल, गणतंत्र परिषद्, हिन्दू महासभा, तमिलनाडु टोइलर्स पार्टी, कोमनवील पार्टी, द्रविड़ कजगम, लोक सेवक संघ तथा निर्दलीय मिलाकर 38 सांसद इस फ्रंट में थे (32 लोकसभा तथा 6 राज्य सभा)। इस प्रकार भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष डॉ. मुखर्जी देश के प्रथम अनौपचारिक नेता प्रतिपक्ष थे।
- 29 जून, 1952 को जम्मू-कश्मीर की विधानसभा ने भारतीय संघ के अंतर्गत स्वायत्त गणराज्य का प्रस्ताव स्वीकार किया तथा 24 जुलाई को नेहरू-अब्दुल्ला समझौता हुआ। यह भारत में विलयित जम्मू-कश्मीर राज्य को विवादास्पद एवं पृथक करने का षडयंत्र था। इसके तहत वहां का अलग संविधान, अलग प्रधानमंत्री एवं अलग झण्डे की व्यवस्था हुयी। प्रजापरिषद् ने इसके खिलाफ आन्दोलन किया, भारतीय जनसंघ ने इसका समर्थन किया। संसद में डॉ. मुखर्जी ने इस षडयंत्र के खिलाफ प्रखर भाषण दिये। जम्मू-कश्मीर में आंदोलन तीव्र हो गया।

- 29-31 दिसम्बर, 1952 को भारतीय जनसंघ का पहला अधिवेशन कानपुर में हुआ। पं. दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के महामंत्री बने। 'भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को व्यक्त करने वाला 'सांस्कृतिक पुरूत्थान' प्रस्ताव दीनदयाल जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। विचार धारा मूलक यह प्रथम प्रस्ताव था। 'राज्य पुनर्गठन आयोग की मांग की गयी।
- मार्च 1953 में कश्मीरपूर्ण विलय के लिये दिल्ली में सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। 11 मई को डॉ॰ मुखर्जी ने सत्याग्रहपूर्वक बिना परमिट में जम्मू-कश्मीर में प्रवेश किया, उन्हें बंदी बनाकर श्रीनगर ले जाया गया। जम्मू-कश्मीर में प्रवेश के लिये देश भर से 10,750 सत्याग्रहियों ने भाग लिया। 23 जून को डॉ. मुखर्जी शहीद हो गये। सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया।
- परिणामतः 9 अगस्त को शेख अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री पद से हटा कर बंदी बनाना पड़ा। अंततः परमिट सिस्टम भी समाप्त हुआ।
- 22 से 25 जनवरी, 1954 को जनसंघ का दूसरा अधिवेशन बम्बई में सम्पन्न हुआ जहां 'स्वदेशी' के संकल्प का आह्वान किया गया। रूस की नकल पर बनी पंचवर्षीय योजना का विरोध किया गया।
- अंग्रेज तो 1947 में भारत से चले गये थे, लेकिन गोवा-दमन-दीव तथा पांडीचेरी अभी भी पुर्तगाल व फ्रेंच साम्राज्य के हिस्सा थे। जनसंघ ने इनकी आजादी का आंदोलन छेड़ा। जनसंघ के कार्यकर्ता श्री नरवने ने 22 जुलाई 1954 को दादरा को मुक्त करवाया 29 जुलाई को नरवने ने ही नारोली द्वीप की मुक्ति का नेतृत्व किया। जनसंघ कार्यकर्ता हेमंत सोमान ने पणजी में पुर्तगाली सरकार के सचिवालय पर 15 अगस्त को तिरंगा झंडा लहरा दिया। देश भर में जनसंघ ने गोवा मुक्ति के लिये आन्दोलन किया।

जनसंघ के अखिल भारतीय मंत्री श्री जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में 101 सत्याग्रहियों के जत्थे ने गोवा में प्रवेश किया। उन्हें बंदी बना कर प्रताड़ित किया गया। मध्य प्रदेश के श्री राजाभाऊ महाकाल एवं उत्तर प्रदेश के श्री अमीर चन्द गुप्त का बलिदान हो गया।

- शिक्षा व्यवस्था बदलने के आह्वान के साथ जनसंघ का तीसरा अधिवेशन 28 दिसम्बर–2 जनवरी, 1954–55 जोधपुर में हुआ। कश्मीर एकीकरण के जननायक श्री प्रेमनाथ डोगरा, अध्यक्ष बने। 19–22 अप्रैल, 1955 में चौथा अधिवेशन जयपुर में सम्पन्न हुआ। महान गणितज्ञ आचार्य देवा प्रसाद घोष अध्यक्ष बने। आचार्य घोष की अध्यक्षता में ही पांचवा अधिवेशन दिल्ली में सम्पन्न हुआ। संघात्मकता का तानाबाना बुनने के लिये राज्यों का निर्माण हो रहा था। क्षेत्रवादिता एवं हिंसा का नंगा नाच हुआ। जनसंघ ने जनपदों तक विकेन्द्रित 'एकात्म शासन' की मांग की। दिल्ली अधिवेशन में ही सम्प्रदायवाद के खिलाफ 'भारतीयकरण' का प्रस्ताव पारित हुआ तथा 1957 के महानिर्वाचन के लिये घोषणापत्र तैयार किया गया।
- 8 अगस्त, 1957 को भारतीय जनसंघ का पहला ग्यारह दिवसीय स्वाध्याय शिविर बिलासपुर में सम्पन्न हुआ।
- आचार्य देवाप्रसाद घोष की अध्यक्षता में ही 4–6 अप्रैल, 1958 छठा अधिवेशन अम्बाला में हुआ। चुनाव सुधार के लिये संवैधानिक व्यवस्था की मांग की गयी। 26–28 दिसम्बर 1958 जनसंघ का 7वां ऐतिहासिक अधिवेशन पुनः आचार्य घोष की अध्यक्षता में बंगलोर में हुआ। 1957 के महानिर्वाचन से जनसंघ ने लोकसभा की चार सीटें जीतीं तथा मतदान प्रतिशत लगभग दुगुणा होकर 5.93 प्रतिशत हो गया।
- 10 सितम्बर 1958 में नेहरू–नून समझौता हुआ, परिणामतः

जलपाईगुड़ी का बेरूबाड़ी यूनियन पाकिस्तान को सौंप दिया। बेरूबाड़ी को बचाने के लिये जनसंघ ने देशव्यापी आन्दोलन किया।

- 1959 में चीन की भारतीय सीमा में घुसपैठ के खिलाफ मुखर आवाज उठाई। तिब्बत की आजादी की मांग की। पूरे साल जन–जागरण के कार्यक्रम हुये।
- 27 जून से 6 जुलाई, 1959 तक विधायक एवं सांसदों की आचार संहिता के लिये पूना में दस दिवसीय स्वाध्याय शिविर सम्पन्न हुआ।
- 23–25 जनवरी, 1960 को जनसंघ का आठवां अधिवेशन श्री पीताम्बरदास की अध्यक्षता में नागपुर में संपन्न हुआ। चीनी आक्रमण के खिलाफ मुखरता, हिन्दी चीनी भाई–भाई के भ्रम के खिलाफ सरकार को सावधान करने वाले कार्यक्रम चलते रहे। दिसम्बर 30 जनवरी 1960–61, नौवां अधिवेशन श्री रामा राव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 1962 के महानिर्वाचन के लिये घोषणापत्र तैयार हुआ। 10वां अधिवेशन भारत के महान भाषाविद् आचार्य रघुवीर की अध्यक्षता में दिसम्बर 29–31, 1962 को भोपाल में सम्पन्न हुआ। दुर्भाग्य से 14 मई, 1963 को आचार्य रघुवीर की एक सड़क दुर्घटना में दुःखद् मृत्यु हो गयी, पुनः आचार्य देवाप्रसाद घोष को अध्यक्ष चुना गया। ग्यारहवां अधिवेशन 28–30 दिसम्बर, 1963 को आचार्य देवा प्रसाद घोष की अध्यक्षता में अहमदाबाद में हुआ।
- 1962 में जनसंघ के लोकसभा में 14 सांसद विजयी हुये तथा मतदान प्रतिशत 6.44 रहा। जनसंघ के इतिहास में 1964 का वर्ष एक मील का पत्थर है। 10 से 15 अगस्त तक ग्वालियर में स्वाध्याय शिविर हुआ जिसमें 'सिद्धांत और नीति' प्रलेख का प्रारूपण हुआ, जिसमें 'एकात्म मानववाद' अन्तर्निहित था। नवम्बर 1964 की कार्यकारिणी ने प्रारूप

को स्वीकार किया तथा 23 से 26 जनवरी, 1965 को श्री बच्छ राज व्यास की अध्यक्षता में हुये, विजयवाड़ा के बारहवें अ.भा. अधिवेशन में इसे अधिकृत रूप से पार्टी की विचारधारा घोषित किया गया। दिसम्बर 1964, जनसंघ ने अणुबम बनाने की मांग की।

- मार्च 1965 में पाकिस्तान ने कच्छ में कंजरकोट क्षेत्र पर कब्जा कर लिया व आक्रमण जारी रखा, भारत सरकार ने पाकिस्तान से समझौता करना चाहा, जनसंघ ने विरोध किया। जुलाई-अगस्त में जनसंघ ने देशव्यापी प्रदर्शनों की योजना की। देश भर में एक लाख स्थानों पर प्रदर्शन हुये तथा 16 अगस्त को तब तक के भारत के राजनैतिक इतिहास का सबसे बड़ा प्रदर्शन कच्छ समझौते के खिलाफ देश भर के पांच लाख लोगों ने दिल्ली में आकर किया, नारा था 'फौज न हारी, कौम न हारी, हार गयी सरकार हमारी'।
- प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को इससे सम्बल मिला वे युद्ध सिद्ध हो गये। एक सितम्बर को भारत-पाक युद्ध प्रारम्भ हो गया। जनसंघ ने सरकार व सेना के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया, भारत की सेनायें विजय हुयी। रूस की मध्यस्थता पर युद्ध विराम हो गया, ताशकंद में शिखर सम्मेलन तय हुआ, जनसंघ ने विरोध किया। ताशकंद में शास्त्री जी विजयी क्षेत्रों को वापस पाकिस्तान को सौपने के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये, रात्रि में ही हृदय गति रूकने से उनकी मृत्यु हो गयी। भारतीय जनसंघ ने ताशकंद घोषणा का मुखर विरोध किया। संसद के समक्ष बड़ा प्रदर्शन किया।
- अप्रैल 1966 में प्रो. बलराज मधोक की अध्यक्षता में जनसंघ का तेरहवां अ.भा. अधिवेशन जालंधर में हुआ। 1967 में चतुर्थ आम चुनाव हुये। जनसंघ अब कांग्रेस के बाद नम्बर दो का अ.भा. राजनैतिक दल बन गया। लोकसभा में हमारे 35 सदस्य विजयी हुये तथा 9.41 प्रतिशत वोट

प्राप्त हुये। विधानसभाओं में भी जनसंघ क्रमांक दो का अ. भा. दल बन गया था। देश भर में हमारे 268 विधायक जीते थे।

- मार्च 1967 को पहली गैर कांग्रेस सरकार बिहार में बनी, जनसंघ इसमें शामिल था क्रमशः पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा तथा मध्यप्रदेश में भी संविद सरकारें बनी, सभी सरकारों में जनसंघ सांझीदार था।
- दिसम्बर 26-30, 1967 कालीकट में जनसंघ का चौदहवां अ.भा. अधिवेशन हुआ। महामंत्री के नाते जिनके मार्गदर्शन में जनसंघ पुष्पित व पल्लवित हो रहा था, पं. दीनदयाल उपाध्याय को पार्टी ने अपना अध्यक्ष चुना। दीनदयालजी का ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण हुआ। नेपथ्य में रह कर काम करने वाला नेता, अब दुनियां की नजर में आ गया, नजर लग गयी, 11 फरवरी 1968 को दीनदयाल जी शहीद कर दिये गये, यह देश की राजनीति पर वज्राघात था।
- 13 फरवरी, 1968 को श्री अटल बिहारी वाजपेयी जनसंघ के अध्यक्ष चुने गये। 8-11 जुलाई को देश में पहला अखिल भारतीय महिला स्वाध्याय शिविर नागपुर में सम्पन्न हुआ। 25-27 अप्रैल 1969 को जनसंघ का पंद्रहवां अधिवेशन बम्बई में हुआ। श्री अटल बिहारी वाजपेयी पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुये। यही वह अधिवेशन था जहां नारा लगा 'प्रधानमंत्री की अगली बारी अटल बिहारी-अटल बिहारी।' 2-8 जुलाई को रायपुर में अ.भा. स्वाध्याय शिविर हुआ।
- 28-30 दिसम्बर, 1969 को जनसंघ का 16वां अ.भा. अधिवेशन श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पटना में सम्पन्न हुआ। कांग्रेस, कम्युनिस्ट तथा मुस्लिम लीग के गठबंधन के खिलाफ देश को चेतावनी 'तीन तिलंगे-करते दंगे'। देश भर में नारा लगा। पटना में ही 'स्वदेशी प्लान' की घोषणा हुयी। पुनः भारतीयकरण का नारा लगा। जुलाई 1970 को

'सम्पूर्ण रोजगार के लिये योजना' की घोषणा हुयी।

- जनवरी 1971 में महानिर्वाचन के लिये 'गरीबी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा' शीर्षक से घोषणापत्र जारी हुआ। संविद सरकारों की दलबदलू राजनीति एवं इन्दिरा गांधी द्वारा कांग्रेस के विभाजन ने देश की राजनीति को गरमा दिया। गैर–कांग्रेसी दलों के गठबंधन का हिस्सा था जनसंघ, अपनी स्थापना के बाद पहली बार जनसंघ पीछे आया। संसद में उसकी सांसद संख्या 35 से घट कर 21 रह गयी, मत प्रतिशत भी घट गया। श्रीमती इन्दिरा गांधी को ऐतिहासिक विजय प्राप्त हुयी।
- दिसम्बर 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया, बांगला देश युद्ध प्रारम्भ हो गया, पुनः जनसंघ ने सेना व सरकार के साथ कंधे से कंधा मिला कर काम किया, भारत की विजय हुयी, बंगला देश का निर्माण हुआ। बंगला देश को मान्यता देने के लिये जनसंघ ने दिल्ली में बड़ा प्रदर्शन किया। 2 अप्रैल को जनसंघ 'दूसरा ताशकंद नहीं' दिवस मनाया।
- दलितों के खिलाफ हुयी उत्पीड़न की कार्यवाई के खिलाफ जनसंघ अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी ने बम्बई के हुतात्मा चौक पर सांकेतिक अनशन किया।
- युद्ध विजय के बाद हुये 'शिमला समझौते' का जनसंघ ने विरोध किया। राजस्थान की सीमा पर गडरा रोड शहर को पुनः पाकिस्तान को लौटाये जाने के खिलाफ गडरा रोड में जाकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सत्याग्रह किया। शिमला समझौते के खिलाफ संसद के समक्ष विशाल प्रदर्शन। 3 अगस्त को सियाल कोट सेक्टर में श्री जगन्नाथ राव जोशी ने सत्याग्रह किया। सुईगाम (गुजरात) में डॉ. भाई महावीर ने सत्याग्रह किया।
- 15 अगस्त को श्री अरविंद शताब्दी को जनसंघ ने 'अखण्ड भारत दिवस' के रूप में मनाया।

- 1971 की विजय ने श्रीमती इन्दिरागांधी को मदांध कर दिया। भ्रष्टाचार अहमन्यता एवं दमन उनके शासन के पर्याय बन गये। दिसम्बर 1972 को श्री लाल कृष्ण आडवाणी की अध्यक्षता में जनसंघ का 18वां अधिवेशन कानपुर में हुआ। गुजरात में 'नवनिर्माण आन्दोलन एवं बिहार में 'समग्र क्रांति' आन्दोलन से देश दोलायमान हो गया। बाबू जयप्रकाश नारायण आन्दोलन के नेता बने। आन्दोलन के अग्रणी दस्ते में अ.भा. विद्यार्थी परिषद् नेतृत्व कर रहा था। जनसंघ आन्दोलन में साथ था। श्री नानाजी देशमुख की जे.पी. को आन्दोलन में लाने के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका रही। जनसंघ ने दूसरी बार अध्यक्ष बने श्री लालकृष्ण आडवाणी जे. पी. को जनसंघ के दिल्ली अ.भा. अधिवेशन (19वां 7 मार्च 1973) में लेकर आये। जे.पी. ने कहा "यदि जनसंघ फासिस्ट है तो मैं भी फासिस्ट हूँ।"
- गुजरात में हुये उपचुनाव में कांग्रेस हार गयी तथा श्री राजनारायण की याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट श्रीमती गांधी का चुनाव निरस्त कर उन्हें चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दिया। 25 जून 1975 की मध्यरात्रि देश में आपातकाल की घोषणा हुई, लोकतंत्र निरस्त कर दिया गया। सभी नेता या तो मीसाबंदी बना लिये गये या भूमिगत हो गये। रा.स्व.संघ प्रतिबंधित हो गया। अगले वर्ष महानिर्वाचन होना था, संविधान में संशोधन कर श्रीमती गांधी ने लोकसभा का कार्यकाल एक साल बढ़ा दिया, परिणामतः चुनाव नहीं हुये।
- बाबू जयप्रकाश नारायण ने लोक संघर्ष समिति का दायित्व श्री नानाजी देशमुख को सौंपा। देश भर में व्यापक सत्याग्रह हुआ, लक्षावधि लोग जेलों में चले गये। जनसंघ के कार्यकर्ता एवं संघ के स्वयंसेवक इस कार्य में अग्रिम पंक्ति में रहे। 1977 में चुनाव हुये, भारत में हुयी यह मौन क्रांति थी,

कांग्रेस ही नहीं, स्वयं श्रीमती इन्दिरागांधी व उनके पुत्र श्री संजय गांधी भी चुनाव हार गये। इन चुनावों में कांग्रेस के सामने जनता पार्टी थी। जयप्रकाशजी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ, समाजवादी पार्टी, भारतीय लोकदल एवं संगठन कांग्रेस ने मिलकर यह सांझी पार्टी बनायी थी। चुनाव के बाद 23 मार्च, 1977 को आपातकाल की समाप्ति की घोषणा हुई, आपातकाल भी हटा दिया गया। लेकिन अब जनसंघ का विलय जनतापार्टी में हो गया था। जनसंघ के तीन नेता जनता पार्टी सरकार में शामिल हुये।

- जनता पार्टी सत्तालोलुप आपसी स्पर्धा की शिकार हो गयी। वर्चस्व की लड़ाई में जनसंघ के कार्यकर्ताओं के खिलाफ 'दोहरी सदस्यता' का मुद्दा उठाया गया। जनसंघ के लोग या तो जनतापार्टी छोड़े या फिर संघ से अपने रिश्ते समाप्त करें। इस मुद्दे पर जनसंघ के नेताओं ने जनता पार्टी छोड़ दी तथा 6 अप्रैल, 1980 में पंच निष्ठाओं के आधार पर 'भारतीय जनता पार्टी' का गठन हुआ।
- 1980 का लोकसभाई उपचुनाव श्रीमती गांधी जीत चुकी थी। जनता पार्टी के टूटने के बाद पुनः गैर-कांग्रेसी दलों में कांग्रेस का मुकाबला करने के लिये गठबंधन की राजनीति के प्रयत्न हुये, जनसंघ के समय 'दूध से जले हमारे नेता फूँक-फूँक कर कदम रखने लगे तथा तय किया कि हम अब अपनी पहिचान समाप्त करनेवाला कोई गठबंधन नहीं करेंगे। 31 अक्टूबर 1984 को श्रीमती गांधी के एक अंगरक्षक ने उनकी हत्या कर दी। व्यापक सिक्ख विरोधी दंगे हुये। जनसंघ एवं संघ कार्यकर्ताओं ने उस हर प्रयत्न को विफल करने में सक्रियता निभाई जो हिन्दू-सिक्ख घृणा फैलाते थे। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 31 अक्टूबर को ही श्री राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई। लोकसभा के चुनाव घोषित हुये। श्रीमती गांधी के प्रति 'सहानुभूति की

लहर' में चुनाव बह गये। भारतीय जनता पार्टी का यह पहला चुनाव था, उसे केवल दो सीटें प्राप्त हुयी।

- पार्टी में जबरदस्त आत्मालोचनात्मक बहस हुयी। श्री कृष्ण लाल शर्मा के संचालन में एक कार्यदल गठित हुआ, कार्यदल ने अनुशंसा की कि 'एकात्म मानववाद' को पुनः भाजपा की मूल विचारधारा घोषित की जाये। परिणामतः अक्टूबर 1985 में गांधी नगर में आयोजित पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने उसे भाजपा के संविधान में जोड़ा। भाजपा को 'कार्यकर्ता आधारित जनसंगठन'; बनाने का संकल्प व्यक्त किया गया। 1986 में भाजपा की अध्यक्षता का दायित्व श्री लालकृष्ण आडवाणी पर आया।
- श्री राजीव गांधी काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रहे थे; 'मिस्टर-क्लीन' की उनकी छवि थी। भाजपा राजनीति के हांसिये पर आ गयी थी। लेकिन इसमें वास्तविकता नहीं थी। 1987 में ही बोफोर्स काण्ड उजागर हो गया, उनके वरिष्ठ मंत्री वी.पी. सिंह ने विद्रोह कर दिया। 'मिस्टर क्लीन' की छवि ध्वस्त हो गयी।
- शाहबानों के केस में उनकी अल्पसंख्यक वोट बैंक राजनीति का पर्दाफाश हो गया। भाजपा के कार्यकर्ताओं ने इस विषय पर जम कर जनजागरण किया, पुनः 'समान नागरिक संहिता' की मांग की। जनवरी 1988 में भाजपा ने राजीव गांधी के त्यागपत्र व मध्यावधि चुनाव की मांग की। देश भर में सत्याग्रह हुआ। 3 मार्च 1988 को पुनः श्री लाल कृष्ण आडवाणी भाजपा के अध्यक्ष चुने गये। अगस्त 1988 में राष्ट्रीय मोर्चे का गठन हुआ, एन.टी. रामाराव अध्यक्ष एवं वी. पी. सिंह संयोजक बने। इसी में से 'जनता दल' का उद्‌भव हुआ।
- 25 सितम्बर, 1989 को भाजपा व शिवसेना का गठबंधन हुआ। चुनाव परिणाम अपेक्षा के अनुकूल आये। राजीव गांधी

की सरकार सत्ता के बाहर हो गयी। 1984 में जहां भाजपा को 2 सीटें मिली थी, अब वे बढ़ कर 86 हो गयी। इन चुनावों में बोफोर्स के मुद्दे के अलावा भाजपा ने अपना विचार व्यक्त किया 'सब के लिये न्याय, तुष्टीकरण किसी का नहीं।' श्री लालकृष्ण आडवाणी पहली बार लोकसभा में गये।

- जून 1989, पालनपुर (हिमाचल प्रदेश) श्री राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने रामजन्म भूमि आन्दोलन के समर्थन का निर्णय लिया। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का यह ज्वलंत मुद्दा था। छद्म धर्मनिरपेक्षता बनाम वास्तविक सर्वपंथ सम्भाव का यह युद्ध था। 25 सितम्बर दीनदयाल जयंती से आडवाणी की राम रथ यात्रा सोमनाथ से प्रारम्भ हुयी, 30 अक्टूबर को इसे अयोध्या पहुंच कर 'कार सेवा' में सहभागी होना था। 'रथयात्रा' को मिला जन–समर्थन अद्भुत था।
- 23 अक्टूबर को बिहार के समस्तीपुर में यात्रा को रोक दिया गया, आडवाणी जी वहां पांच सप्ताह बंदी रहे। सब सरकारी प्रतिबंधों को तोड़ कर 30 अक्टूबर को कार सेवा हुयी। वी. पी. सिंह सरकार गिर गयी। चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने उन्होंने अयोध्या मुद्दे को सुलझाने में असफल किन्तु ईमानदार प्रयत्न किये। 7 महीनों में ही राजीव गांधी ने उनकी सरकार गिरा दी। जुलाई 1991 उत्तर प्रदेश राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत हुयी। छद्म धर्मनिरपेक्षता पराजित हुयी। श्री कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बने। लोकसभा के चुनाव के दौरान राजीव गांधी की हत्या हो गयी, कांग्रेस को सहानुभूति का लाभ मिला। भाजपा आगे बढ़ी उसकी सीटें 86 से 119 हो गयी। पी.वी. नरसिंहराव के नेतृत्व में कांग्रेस सरकार बनी। राममंदिर का मसला उलझता ही गया, 6 दिसम्बर, 1992 की कार सेवा में विवादित बाबरी ढ़ांचा ढह गया।
- सन् 1996, 1998 एवं 1999 में तीन लोकसभा चुनाव हुये, भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी। श्री अटल बिहारी वाजपेयी पहले 13 दिन, फिर 13 महीने और बाद में साढ़े चार साल भारत के प्रधानमंत्री रहे। यह सत्ता केवल भाजपा की नहीं एन.डी.ए. की थी। 2004 का चुनाव एन. डी.ए. हार गया।

- 10 साल पार्टी ने विपक्षी की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पहली बार भाजपा के पूर्ण बहुमत की सरकार बनी, जो आज 'सब का साथ सब का विकास' उद्घोषणा के साथ गौरव सम्पन्न भारत का पुनर्निर्माण कर रही है। श्री अमित शाह के नेतृत्व में लगभग 11 करोड़ सदस्यों वाली विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी बन गयी है।

भारतीय राजनीति में भाजपा का योगदान

- राष्ट्रीय अखण्डता कश्मीर का भारत में पूर्ण विलय, कबाइली वेष में पाकिस्तानी आक्रमण का प्रतिकार, परमिट–व्यवस्था एवं धारा 370 की समाप्ति, पृथकतावाद से निरन्तर संघर्ष करने वाली एक मात्र पार्टी भारतीय जनसंघ या भाजपा है, अन्यथा कश्मीर का बचना कठिन था।
- गोवा मुक्ति आंदोलन, सत्याग्रह एवं बलिदान। बहुत दबाव के बाद ही सरकार ने सैनिक कार्यवाही की।
- बेरुबाड़ी एवं कच्छ समझौते हमारी राष्ट्रीय अखण्डता को चुनौती थे। हमारी पार्टी के इस चुनौती का सामना किया।
- आज भी देश में राष्ट्रीय अखण्डता के मुद्दे उठाना पृथकतावाद से जूझना एवं इस निमित्त समाज को निरन्तर जाग्रत रखने का काम भाजपा ही कर रही है।
- देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न कर, भारत पर हमलों की हिमाकत करने वालों को अटलजी की सरकार ने सीधा संदेश दिया।

लोकतंत्रः विकास एवं रक्षा

- प्रथम चरण में जब आजादी के आंदोलन के सभी नेता सत्ता पक्ष में जा बैठे थे। विपक्ष या तो था ही नहीं या राष्ट्रभक्ति से शून्य वामपंथियों के पास था। जनसंघ ने चुनौती को स्वीकार किया तथा भारत के लोकतंत्र को भारतीय जनसंघ के रूप में सबल विपक्ष दिया। 1967 में जनसंघ दूसरा बड़ा दल बन गया।
- चुनाव सुधार के मुद्दे उठाने वाले एकमात्र दल जनसंघ या भाजपा ही है। लोकतांत्रिक मर्यादाओं को हमारी पार्टी ने बल दिया, उनका उल्लंघन नहीं होने दिया।
- आपातकाल के प्रतिकार की कहानी हमारी लोकतंत्रात्मक निष्ठा को पुष्ट करती है।
- पं. दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में जो विपक्ष उभरा वहीं विकल्प बनने में भी सक्षम था। श्री अटलबिहारी वाजपेयी एवं श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय लोकतंत्र में विकल्प के नियामक है। भारतीय लोकतंत्र के अपेक्षित अखिल भारतीय संगठन एवं नेतृत्व आज केवल भाजपा के पास है।

विचारधारा

- राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है। समाज को अपेक्षित दिशा में प्रगति के पथ पर ले जाना भी उसका कार्य है। इसके लिये संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो संगत विचारधारा से प्राप्त हेता है। आज भारत के सभी राजनैतिक दल विचारधारा शून्यता के शिकार हैं। भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद तथा पंच-निष्ठाओं की संगत विचारधारा के आधार पर संगठन का नियमन कर रही है। शासन की नीति में भी इनका समुचित प्रतिबिम्बन होगा।
- सुशासन : ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं की शक्ति एवं सरकार का सुनियमन सुशासन की गारंटी है। छः साल का केन्द्रीय शासन एवं प्रदेशों में भाजपा की सरकारों ने अन्य दलों की

सरकारों की तुलना में अच्छा शासन दिया है। पिछले वर्षभर से श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सकारात्मक सुशासन की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है। व्यवस्थाओं की पुरानी विकृतियों का शमन करने में अभी भी कुछ वक्त लगेगा।

'भारत माता की जय'

सैद्धांतिक अधिष्ठान

(इस प्रारूप का बिन्दू क्रमांक 2,3 व 4 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को व्यक्त करते हैं तथा बिन्दू क्रमांक 5,6 व 7 एकात्म मानववाद को। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद व एकात्म मानववाद विषयों पर जिला प्रशिक्षण वर्ग में अलग से सत्र होने वाले हैं। अतः जिला प्रशिक्षण वर्ग में पंच निष्ठाओं का विषय अधिक विस्तार से लिया जाना चाहिये। बिन्दू क्रमांक 8 पंच निष्ठाओं के 'सकारात्मक पंथ निरपेक्षता में निष्ठा' का हिस्सा है तथा बिन्दू क्रं. 9 व 10 'लोकतंत्र के प्रति निष्ठा' का भाग है। पांचों निष्ठाओं प्रथमतः सभी प्रशिक्षार्थियों को याद करवानी चाहिये तथा पश्चात विमर्शपूर्वक उनका विषदीकरण करना चाहिये।)

1. हमारी पार्टी का अधिष्ठान कोई व्यक्ति या नेता विशेष नहीं है, न परिवार या वंश तथा न ही जाति एवं मजहब वरन् हमारा अधिष्ठान सिद्धांत में है।
2. हमारे सिद्धांत की अभिव्यक्ति 'भारत माता की जय' उद्घोष से होती है। यह उद्घोष हमारे सिद्धांत बीजभूत आधार हैं। इसी लिये हमको राष्ट्रवादी कहा जाता है। भारत (भूमि) माता (संस्कृति) तथा जय (जनाकांक्षा) को व्यक्त करते हैं 'भू, जन एवं संस्कृति के संघात से राष्ट्र उत्पन्न होते हैं' इसी लिये 'देश भक्ति' हमारे कार्य का आधार है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में हमारा विश्वास है। राजनैतिक राष्ट्रवाद एवं पृथकतावाद के

विचार 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विरोधी हैं।
3. 'भारत विभाजन' का सक्रिय विरोध करने वाला एकमात्र संगठन था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। भारत विभाजन से बंगाल को बचाने वाले महापुरूष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी (मा. स. गोलवलकर) एवं डॉ. मुखर्जी की सांझी सहमती से भारतीय जनसंघ की स्थापना हुयी। विभाजन की छाया से जम्मू और कश्मीर को बचाने एवं भारत में उसका सम्पूर्णतः विलय करवाने के आन्दोलन में डॉ. मुखर्जी शहीद हो गये। परिणामतः जम्मू और कश्मीर आज भारत का अभिन्न अंग है।
4. देश की अखण्डता के लिये भारतीय जनसंघ ने बहुत आंदोलन किये, जिनमें महत्वपूर्ण हैं बेरूबाड़ी आंदोलन, गोवा मुक्ति आंदोलन (गोवा में जनसंघ के अनेक कार्यकर्ताओं का बलिदान हुआ, जिनमें मध्यप्रदेश के राजाभाऊ महाकाल तथा उ.प्र. के अमीरचंद गुप्ता प्रमुख हैं)। कच्छ करार विरोधी आंदोलन एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु से कलंकित ताशकंद समझौते के खिलाफ आंदोलन रेखांकनीय है। राष्ट्रीय अखण्डता हमारे लिये राजनैतिक नारेबाजी का नहीं वरन् हमारी श्रद्धा का विषय है।
5. 1947 में हम अंग्रेजों से मुक्त हो गये लेकिन अंग्रेजियत किंवा पाश्चात्य विचारों से हम मुक्त नहीं हो पाये। सोवियत संघ प्रेरित समाजवादी केन्द्रीकरण के अधिष्ठान पर बनी पंचवर्षीय योजनाओं का विरोध करते हुये जनसंघ ने 'स्वदेशी अर्थव्यवस्था' का आग्रह किया जिसका आधार था 'आर्थिक लोकतंत्र' एवं 'विकेन्द्रीकरण' दीनदयाल जी ने इसे 'अर्थायाम' कहा।
6. पाश्चात्य समाजवाद एवं पूंजीवाद की बहस में पड़ी राजनीति को भारतीय जनसंघ ने नयी दिशा दी, 1965 विजयवाड़ा में 'एकात्म मानववाद' को अपना विचार घोषित किया।
7. एकात्म मानववाद का विचार व्यक्ति व समाज की एकात्मता, समाज एवं सृष्टि या प्रकृति की एकात्मता तथा अंततः भौतिकता एवं अध्यात्मिकता की एकात्मता का प्रणयन करता है एवं आग्रह करता है कि समाज इस एकात्मता का अनुभव

कर इसे देश की राजनीति में प्रतिबिम्बित करे। व्यक्ति, समष्टि, सृष्टि व परमेष्ठी की एकात्मता मानव के अस्तित्व में निगडित है।

8. पाश्चात्य 'थियोक्रेसी' की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुये 'सेक्युलरिज्म' की भी भारतीय राजनीति अनुगामिनी बन रही थी। भारत में न कभी थियोक्रेसी थी, न हो सकती है। भारतीय संस्कृति 'पंथ निरपेक्ष' या 'सर्व धर्म समभाव' की संस्कृति है। भारतीय राजनैतिक दलों के 'सेक्युलरिज्म' को मा. लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी राम-रथ यात्रा के समय 'सूडो सेक्युलरिज्म' नाम दिया था। हम असाम्प्रदायिक 'धर्म राज्य' के समर्थक हैं। 'धर्म राज्य' के निकट का आधुनिक शब्द पद है 'संवैधानिक स्व-राज्य'।

9. लोकतंत्र मानव द्वारा खोजी गयी शासन व्यवस्थाओं में सबसे कम खराब है, इसे श्रेष्ठता तक पहुंचाता है। इसके लिये दीनदयाल जी ने 'लोकतंत्र का भारतीयकरण' एवं 'लोकमत परिष्कार' की अवधारणाओं का विवेचन किया।

10. आपातकाल की दुरूभिसंधि ने भारत के लोकतंत्र को लील लिया था। लोकतंत्र की रक्षा के लिये बाबू जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में प्रचण्ड आंदोलन हुआ। लोकतंत्र पुनः बहाल हुआ, लेकिन जो राजनैतिक घटना चक्र चला उसमें सांझी राजनीति की आवश्यकता महसूस की गयी तथा भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया। इस तथाकथित सांझी राजनीति पर सत्ता राजनीति हावी हो गयी, जनसंघ के सिद्धांतवादी कार्यकर्ता सत्तावादियों को चुभने लगे। जनता पार्टी टूटी, जनसंघ पुनः भारतीय जनता पार्टी के रूप में प्रस्थापित हुआ। भाजपा ने अपने प्रथम अधिवेशन के सैद्धांतिक रूप में 'पंच निष्ठाओं' की घोषणा की :

1. राष्ट्र की एकता तथा एकात्मता के प्रति निष्ठा;
2. लोकतंत्र के प्रति निष्ठा;
3. गांधीवादी समाजवाद (इस निष्ठा के शब्दों में बाद में परिवर्तन हुआ : गांधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण समता युक्त एवं शोषण मुक्त अर्थव्यवस्था) के प्रति निष्ठा;
4. सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता (इस निष्ठा के शब्दों में भी बाद में परिवर्तन हुआ : सर्व धर्म समभाव या सकारात्मक पंथ निरपेक्षता) के प्रति निष्ठा;
5. मूल्याधिष्ठित राजनीति में निष्ठा।

- पंच निष्ठाओं के सैद्धांतिक आधार पर भारतीय जनता पार्टी का निर्माण हुआ। समय के साथ यह महसूस किया गया कि भारतीय संस्कृति की मूल निष्ठा को व्यक्त करने वाला समग्र विचार जो भारतीय जनसंघ ने 1965 में विजयवाड़ा में 'एकात्म मानववाद' के रूप में स्वीकार किया था वह पुनः भाजपा को भी स्वीकार करना चाहिये की अंततः 1985 की राष्ट्रीय परिषद् ने 'एकात्म मानववाद' को अपना मूलभूत सिद्धांत स्वीकार किया।
- एक राजनैतिक दल के नाते सत्ता या विपक्ष का दायित्व संभाल कर, संवैधानिक व्यवस्थाओं का उपयोग करना हमारा 'साधन' है तथा समाज को सैद्धांतिक अधिष्ठान पर खड़ा करना हमारा 'साध्य' है। जितना हम इस साध्य-साधन विवेक से काम करेंगे हमें व्यावहारिक कार्य योजना प्राप्त होती चली जायेगी। राजनीति की सिद्धांतहीन गतिशीलता अराजक होती है तथा अंततः देश का नुकसान करती है। हम सदैव याद रखते हैं, 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्'। हम राष्ट्रीय अखंडता के पुजारी हैं अतः हमारा नारा है 'जहां हुये बलिदान मुखर्जी - वह कश्मीर हमारा है।'

'भारत माता की जय'

हमारा विचार परिवार

- सन् 1925 विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना नागपुर में हुयी। संघ का विश्वास भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता में है, भारतीयता या हिन्दुत्व इस राष्ट्रीयता का आधार है। सत्तावादी राजनीति से संघ को परहेज है, संघ राष्ट्रभक्त अन्तःकरणों का निर्माण करता है।
- विश्व का यह सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन, हर विरोध के बावजूद क्रमशः आगे बढ़ता रहा। पहले संघ अंग्रेज की आंख में खटकता था, बाद में कांग्रेस की सरकार ने भी संघ पर प्रतिबंध लगाया, क्योंकि कांग्रेस ने मजहब के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार किया था, संघ इसका प्रखर विरोधी था।
- संघ अपने को सम्पूर्ण समाज का संगठन मानता है, वह किसी पंथ, जाति, भाषा, क्षेत्र या दल का हिमायती या विरोधी नहीं है। भारत की संस्कृति के अधिष्ठान पर भारत का पुनःनिर्माण हो, इसके लिये संघ के स्वयंसेवक समाज के सभी क्षेत्रों में विविध संगठनों के माध्यम से काम करते हैं। ये संगठन स्वयंपूर्ण एवं स्वायत्त हैं, संघ का इससे कोई सांगठनिक सम्बंध नहीं है। ये सभी संगठन स्वायत्त हैं। किसी राजनैतिक दल के उपांग नहीं है।
- डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रा.स्व.संघ के द्वितीय सरसंघचालक

श्री गुरुजी (मा.स. गोलवलकर) से विमर्श करते हुये जनसंघ की स्थापना की। श्री गुरुजी ने संघ के तपे-तपाये कार्यकर्ता डॉ. मुखर्जी को दिये, उन्होंने एक भारतीयतावादी स्वतंत्र राजनैतिक संगठन भारतीय जनसंघ के नाम से खड़ा किया, जो आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में विद्यमान है।
- जनसंघ की स्थापना के पहले अ.भा. विद्यार्थी परिषद् की स्थापना हुयी थी। बाकी सभी विद्यार्थी संगठन किसी न किसी राजनैतिक दल के उपांग हैं। अ.भा.वि.प. एक मात्र संगठन है, जो निरन्तर क्रियाशील एवं प्रगति कर रहा है। इसके बोध-शब्द हैं ज्ञान, शील और एकता। इनका नारा है 'आज का छात्र-आज का नागरिक'। जो छात्रों का ट्रेड यूनियन नहीं वरन् व्यापक शिक्षा परिवार में विश्वास करता है। अ.भा.वि.प. को आगे बढ़ाने में श्री यशवंत राव केलकर की निर्णायक भूमिका रही।
- जनसंघ के बाद जो बड़ा संगठन स्थापित हुआ उसका नाम है 'भारतीय मजदूर संघ'। श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी इसके संस्थापक महामंत्री रहे। श्रमिक क्षेत्र में स्थापित वामपंथियों से मजदूर संघ ने जबरदस्त टक्कर ली, नारा लगाया'लाल गुलामी छोड़ कर, बोलो वंदेमातरम्' 'चाहे जो मजबूरी हो, हमारी मांग पूरी हो' यह वामपंथियों का गैरजिम्मेदार नारा था। मजदूर संघ ने कहा 'देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम'; भारतीय मजदूर संघ ने देश की अर्थव्यवस्था को एक घोषत्रयी दी 'देश का औद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण'। आज भारतीय मजदूर संघ सबसे बड़ा मजदूर संगठन है।
- भारतीय उपासना पंथों की एकात्मता को व्यक्त करने वाला 'विश्व हिन्दू परिषद्' स्वामी चिन्मयानंद जी के संदीपनी आश्रम में स्थापित हुआ। दादा साहब आपटे ने इस संगठन को प्रारंभिक दौर में सम्भाला, आज श्री अशोक सिंहल के नेतृत्व में यह संगठन कार्य कर रहा है।
- शिक्षा के क्षेत्र में संघ के स्वयंसेवकों ने बड़ा भारी काम किया है 'विद्याभारती' आज भारत में सर्वाधिक विद्यालयों को संचालित करनेवाला संगठन है। श्री लज्जाराम तोमर इसके

प्रथम संगठन मंत्री थे। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों में 'शैक्षिक महासंघ' के नाम से संगठन काम करता है तथा शिक्षा की तत्वमीमांसा के लिये 'शिक्षण मंडल' काम करता है।

- रंगकर्म एवं कला के क्षेत्र में 'संस्कार भारती' तथा बुद्धिजीवियों की संस्थाओं में समन्वय स्थापित करने वाली 'प्रज्ञा भारती' देश में कार्यरत है। भारतीयता परक इतिहास लेखन की दृष्टि से 'इतिहास संकलन समिति' कार्य करती है तथा साहित्यकारों को एक मंच पर लाने का कार्य 'भारतीय साहित्य परिषद' करती है।
- भारत विकास परिषद्, अधिवक्ता परिषद्, लघु उद्योग भारती, नेशनल मेडिकल आर्गेनाइजेशन (एन.एम.ओ.), आरोग्य भारती आदि संगठन विभिन्न प्रवृतियों को संचालित करते हैं। ग्राम विकास एवं अनुसंधान के क्षेत्र में 'दीनदयाल शोध संस्थान' एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में 'हिन्दुस्तान समाचार' अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।?
- वनवासी क्षेत्र में 'वनवासी कल्याण आश्रम' का व्यापक संगठन है। विविध शिक्षण चिकित्सा एवं सेवा प्रकल्प इसके माध्यम से चलते हैं। दूर-दराज के कठिन क्षेत्रों में 'एकल विद्यालय' का बड़ा भारी नेटवर्क है।
- सेवा के क्षेत्र में विविध संगठनों के माध्यम से स्वयंसेवक काम करते हैं। किसी भी प्राकृतिक या अन्य आपदा के समय स्वयंसेवक तत्परता से सेवा कार्यों में लगते हैं। चाहे उड़ीसा में तूफान हो चाहे आन्ध्र में, चाहे कश्मीर में बाढ़ हो चाहे उत्तराखण्ड में, चाहे सुनामी हो या भूकम्प स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचनेवाले सेवाभावी लोगों में होते हैं। 'सेवा भारती' गरीब बस्तियों में लक्षावधि प्रकल्प संचालित करती है।
- आर्थिक क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ के अलावा दत्तोपंत ठेंगड़ी की प्रेरणा से भारतीय किसान संघ की स्थापना हुयी तथा जब भू-मण्डलीकरण के नाम पर भारत में आर्थिक साम्राज्यवाद अपना पैर पसार रहा था तब ठेंगड़ीजी के नेतृत्व में ही 'स्वदेशी जागरण मंच' की स्थापना हुयी।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पुरुषों का संगठन है, इसी प्रकार का

संगठन महिलाओं के लिये भी होना चाहिये अतः 'राष्ट्र सेविका समिति' की स्थापना हुयी।

- आज देश में कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां भारतीय संस्कृति के अधिष्ठान पर कोई न कोई संगठन कार्य न कर रहा हो। जिन संगठनों के नाम इस पत्रक में आये हैं, ये प्रमुख संगठन हैं। प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर बहुत सी संस्थायें, इस विचार से कार्य करती हैं। समाज राज्यानुगामी नहीं वरन् स्वायत्त होना चाहिये ये सभी संगठन भी स्वायत्त हैं। संघ का इनसे सांगठनिक नहीं वैचारिक संबंध है। अतः इसे 'संघ विचार परिवार' कहा जाता है। आपसी विमर्श से ये सब कार्य करते हैं, परिणामतः आज संघ विचार परिवार उन सबके लिये भय का कारण बन गया है जो भारत में पृथकतावाद या विदेशी विचारों के एजेंट हैं। ये सब संगठन अपनी पार्टी के हिस्सा नहीं हैं। वरन् अपनी पार्टी उस विचार का हिस्सा है, जिनके आधार पर ये संगठन संचालित होते हैं। सब की प्रेरणा का एक ही श्रोत है, 'भारत माता की जय' एवं 'वंदे मातरम्'।

विश्व की सबसे बड़ी ताकत

- आज हमारा विचार परिवार सांगठनिक व सैद्धांतिक रूप से विश्व की सबसे बड़ी ताकत है। संघ सबसे बड़ा वैश्विक स्वयंसेवी संगठन है तथा भाजपा विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी है।
- यह शक्ति और विस्तार हमारे दायित्वबोध को और पक्का करता है, क्योंकि हम जानते हैं कि अहंकार से शक्तियों का क्षरण होता है। हमारे विचार परिवार का आधार है संस्कार एवं हमारी शक्ति ही संस्कृति।
- संस्कार व संस्कृति के प्रकाश में ही हम राजनीति, अर्थनीति एवं शिक्षानीति आदि सामाजिक आयामों की संरचना करते हैं। पारस्परिक स्वायत्तता हमें केन्द्रीकरण के दोषों से मुक्त रखती है।

अपनी कार्यपद्धति

हमारा कार्य एक व्यापक राष्ट्रीय विचार परिवार का अंग है। We are part of wider national school of thought.

1951 से आज तक हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं, इसके तीन प्रमुख कारण हैंः

1. हमारी विचारधारा– Our Ideology
2. हमारी कार्यपद्धति– Our Working System
3. अखिल भारतीय संगठनात्मक संरचना के लिये सतत् प्रयास– Continuous Effort for All India Organizational Structure

इन तीनों के आधार पर समय–समय पर राष्ट्र के सामने जो चुनौतियां आयीं उसका भी हमने सामना किया है। साथ–साथ एक प्रमुख राजनैतिक दल के नाते अपनी भूमिका का सफल निर्वाह भी किया है। कई महत्त्वपूर्ण राजनैतिक, सामाजिक विषयों पर आंदोलन, सफल जनजागरण एवं अनेकानेक कार्यक्रमों के कारण हम आज इस स्थान पर पहुंचने में सफल हुए हैं।

हमारी कार्यपद्धति एक विशिष्ट कार्यपद्धति (Working System) है। इसको समझने के लिये उसके दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं (facets) को समझना आवश्यक है।

कार्यपद्धति की दो बातेंः

1. पारस्परिकता– Belongingness, 'We Feeling' - 'हम भाव'

2. सामूहिकता– Collectivity

संगठन के आज तक के विस्तार के नींव में हमारी अद्वितीय कार्यपद्धति है। इसे स्मरण रखना होगा।

पारस्परिकता एवं सामूहिकता के आधार पर ही Team भावना निर्माण हो सकती है जो अपने कार्य का मुख्य आधार है।

कार्यपद्धति की यह बातें वैसे Visible नहीं होती है पर इन्हीं के आधार पर सुदृढ़ संगठन निर्माण होना संभव है।

हम जब कार्यपद्धति की चर्चा कर रहे हैं तो निम्न कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार करना होगा –

संवाद.... आम भाषा में बातचीत (dialogue), आपस में एक–दूसरे से बातों का आदान–प्रदान विचारों का sharing... इसी का काम संवाद है।

संवाद– 'टीम भावना' का प्राण तत्त्व है इसे समझना, साथ–साथ व्यवहार में लाना संगठन के लिये आवश्यक बात है।

संवाद– हमारी पहल से होगा, ना कि दूसरा हमसे संवाद प्रारंभ करे, इसकी हम प्रतीक्षा करें।

संवाद– प्रारंभ होता है तो वह अपने आप बढ़ता है जो कि कार्य के लिये उपयोगी साबित होता है।

कार्यपद्धति से जुड़ी हुई महत्त्वपूर्ण बातों में एक और बात जिसका राजनैतिक दल में अनन्य साधारण महत्त्व है– वह है निर्णय प्रक्रिया – Decision making mechanism

प्राथमिक इकाई से लेकर ऊपर तक (राष्ट्रीय स्तर तक) यह निर्णय प्रक्रिया हमारे कार्य को काफी मात्रा में प्रभावित करती है।

निर्णय प्रक्रिया के लिये आवश्यक है उसमें उन सभी की सहभागिता हो जिनपर निर्णय करने का दायित्व है।

निर्णय स्वस्थ हो एवं परिणामकारक भी हो, यह देखना आवश्यक है।

इसमें कार्यकर्ता की कार्य में involvement होती है। वो ऐसे सभी बातों को own करता है जिसमें उसका हिस्सा रहता है।

निर्णय प्रक्रिया का और एक महत्वपूर्ण पहलू है सार्थक (meaningful) एवं पर्याप्त चर्चा हो (sufficient discussion) जिससे निर्णय सबको स्वीकार्य भी होता है।

कार्यपद्धति के अन्य और कई महत्वपूर्ण पहलू है जैसे नियमित

श्रेणीशः बैठकें।

अपने कार्य में बैठकों का अनन्य साधारण महत्त्व है। छोटे इकाई से लेकर राज्य इकाई तक, विधायक दल के बैठक से लेकर संसदीय दल की बैठक तक एवं नव मतदाता बैठक से लेकर समीक्षा बैठकों तक, बैठकों के अनंत प्रकार हैं। शायद ही कोई अन्य राजनैतिक दल होगा जिसमें निरंतर रूप से अनेकानेक बैठकों का आयोजन होता होगा, जितना हमारे यहां होना है।

बैठकें पूर्व निर्धारित हों, पूर्व सूचना सभी को हो, बैठकों के विषयों के बारे में जानकारी रहे, बैठक का स्थान, समय, कार्यकाल, वातावरण, सहभागिता, बैठकों का अनुवर्तन (follow up) सभी पहलू पर गंभीरता से ध्यान देना आवश्यक। बैठकें परिणामकारक हो, स्वस्थ वातावरण में हो, यह देखना भी आवश्यक है।

कार्यपद्धति का एक और पहलू है कार्यकर्ता विकास की चिंता करना, कार्यकर्ता को उनके विकास में सहायक होकर मदद करना। कार्यकर्ता के विकास के साथ-साथ उसके संभाल की भी चिंता करना। कार्यकर्ता को काम देकर परखना, observe करना, अनुभव मिले, आत्मविश्वास बढ़े, ये बातें भी महत्त्व की हैं।

कार्यकर्ता विकास, कार्यकर्ता संभाल, कार्यकर्ताओं का समय-समय पर प्रशिक्षण जो विषयानुसार, श्रेणीनुसार होना आवश्यक है।

युगानुकूल चिंतन यह भी हमारी कार्यपद्धति का अंग है। नये-नये प्रयोगों का स्वागत, नवीनतम विधाओं का उपयोग, नये-नये आयामों का पार्टी में जुड़ना, यह भी महत्त्व का है। हम जीवमान इकाई है (Living organization) इस हेतु समयानुकूल परिवर्तन आवश्यक है जिसमें बातों का नयापन (freshness) भी बना रहे एवं नित-नवीन प्राणतत्त्व भी मिला रहे।

Share and care - यह सामूहिकता के लिये आवश्यक तत्त्व है। Sharing तो होता है या होना सरल है पर साथ-साथ Caring भी होना चाहिये।

हम ही सही हैं- यह ठीक नहीं, वो भी विचार कर सकते हैं, वो भी उपयोगी हैं, वो भी पार्टी में नयी बातें जोड़ सकते हैं, ऐसा एक 'विश्वास' (trust) का माहौल उत्पन्न करना, बढ़ाना कार्यपद्धति की

दृष्टि से आवश्यक है।

Exchange of notes माने sharing

कार्य विभाजन, कार्य होते समय देखना, होने के बाद समीक्षा (Review) करना, उन बातों का जहां अनुवर्तन आवश्यक है वह करना, ये बातें भी महत्त्वपूर्ण हैं।

हम यह सदैव याद रखें कि हम हममें से कोई भी पूर्णांक नहीं है, complete entity नहीं है। हम सब अपूर्णांक है पर सब मिलकर पूर्णांक होने की स्थिति में आ सकते हैं।

यह भाव कार्यपद्धति में आवश्यक है।

- One for All, All for One
- All are important but nobody is indispensible (सभी महत्त्वपूर्ण परंतु अपरिहार्य कोई नहीं)
- सब कार्यकर्ता के लिए कार्य - सब कार्य के लिए कार्यकर्ता
- पूर्व योजना - पूर्ण योजना (Planning in Advance, Planning in Detail)

संवाद, समीक्षा, चर्चा, बैठकें, निर्णय प्रक्रिया, कार्यकर्ता विकास, संभाल, प्रशिक्षण, प्रवास, परखना, गलतियों का स्वीकार करना, long rope देना, no full stop की भूमिका... निरंतर आगे जाना, विकसित होकर आगे बढ़ने का प्रयास करना यही कार्यपद्धति के महत्त्व के बिन्दु हैं।

सामूहिकता एवं पारस्परिकता के आधार पर व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना भाजपा के कार्य के विकास एवं विस्तार के लिये आवश्यक है।

एकात्म मानववाद

- भाजपा संविधान की धारा तीन के अन्तर्गत 'एकात्म मानववाद' भाजपा का मूल दर्शन है। पं. दीनदयाल उपाध्याय वे अपने सुदीर्घ चिन्तन, अध्ययन एवं मनन के बाद सन् 1964-65 में विचारधारा के नाते इसका प्रणयन किया।
- पाश्चात्य राजनैतिक चिन्तन ने मानव को 'सेक्यूलरवाद, व्यक्तिवाद (पूंजीवाद) समाजवाद एवं साम्यवाद की विचार धाराएं दी थीं। स्वतंत्र भारत का नेतृत्व भी इन्हीं वादों में भारत का भविष्य खोज रहा था। दीनदयाल जी ने इस खोज में हस्तक्षेप करते हुए यह सवाल खड़ा किया कि जब हमने पाश्चात्य साम्राज्यवाद को नकार दिया, तब अब हमारी क्या मजबूरी है कि हम पाश्चात्य वादों का अनुगमन करें।
- सामान्यतः भारत के राजनैतिक क्षेत्र में स्थापति सभी दल यह सोचते थे कि हमें कुछ संशोधनों के साथ इन पाश्चात्य वादों को ही स्वीकारना पड़ेगा क्योंकि हमारे पास कोई अन्य चिंतन नहीं है। हम तो राष्ट्र थे ही नहीं। पाश्चात्यों ने ही आकर हमको राष्ट्र बनने के लिए तैयार किया है। उनका

विचार है हम राष्ट्र बनने जा रहे हैं या हम नवोदित राष्ट्र है, आदि आदि।

- भारतीय जनसंघ या भारतीय जनता पार्टी भारत को प्राचीन एवं सनातन राष्ट्र मानती है। पश्चिम की राष्ट्र-राज्य परिकल्पना से पुरानी कल्पना भारत के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की है। भारतीय संस्कृति की एक गौरवसम्पन्न ज्ञान-परम्परा हैं हमें इसी ज्ञान-परम्परा में भारत का भविष्य खोजना चाहिए।
- मानव की तरफ देखने की पाश्चात्य दृष्टि खण्डित हैं उनका व्यक्तिवाद, समाजवाद का दुश्मन है तथा समाजवाद, व्यक्तिवाद का शत्रु है। वे प्रकृति पर मानव की विजय चाहते हैं, इस प्रकार यहां भी प्रकृति बनाम मानव उनका समीकरण है। सेक्यूलरवाद को अपना कर उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन को अध्यात्म से काट लिया, अतः भौतिकवाद बनाम अध्यात्म, स्टेट बनाम चर्च तथा रिलिजन बनाम सांइस के द्वंद्वमूलक समीकरण वहां उत्पन्न हुये।
- दीनदयाल जी मानते थे कि पश्चिम की यह बहस भी एक मानवीय बहस है, इसे हमें जानना चाहिए तथा इससे कुछ सीखना भी चाहिये, लेकिन हमें इन द्वंद्वमूलक निष्कर्षों का अनुयायी नहीं बनना चाहिये।
- अतः मौलिक भारतीय चिन्तन के आधार पर विकल्प देने की जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं स्वीकार की। भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी के सभी कार्यकर्ता इस काम में लगे। 1959 का पूना अभ्यासवर्ग, 1964 का ग्वालियर अभ्यास वर्ग तथा 1964 के संघ शिक्षा वर्गों के इस दृष्टि से विशेष महत्व है। इन वर्गों में परिपक्व हुये विचारों को दीनदयाल जी ने सिद्धांत और नीति प्रलेख में 'एकात्म मानववाद' नाम से

प्रस्तुत किया। 1965 में भारतीय जनसंघ के विजयवाड़ा वार्षिक अधिवेशन में इसे मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया गया तथा 1985 में भारतीय जनता पार्टी ने भी इसे अपने मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया।

- यह विचार व्यक्ति बनाम समाज नहीं वरन व्यक्ति और समाज की एकात्मता का विचार है। यह मानव बनाम प्रकृति नहीं वरन मानव के साथ प्रकृति की एकात्मता का विचार है। भौतिक बनाम अध्यात्मिक नहीं वरन इनकी एकात्मता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया है 'यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि स धर्म।' अर्थात् यह व्यष्टि, समिष्ट, सृष्टि व परमेष्ठी की एकात्मता का विचार है।
- यह विचार दृश्यमान पृथकताओं में एकात्मता के सूत्र खोजता है। संसार में पृथकता नहीं विविधता हैं, जो 'पिंड' में है वही 'ब्रह्माण्ड' में है। आज मानव अपने को व्यक्ति मान कर अपनी सामाजिक संस्थाओं से युद्ध कर रहा है, परिवार, जाति, वंश , पंचायत सब को अपना दुश्मन मान रहा है। समाजवाद के नाम पर तानाशाहियों का सृजन कर रहा है, विकास के नाम पर प्रकृति से युद्ध कर रहा है, पर्यावरण का विनाश कर भयानक विभीषिकाओं को आमंत्रित कर रहा है। अध्यात्म का निषेध कर भोगेन्द्रियों का गुलाम बन रहा है। सुख की खोज में दुःख कमा रहा है तथा आनंद की अवधारणा से अपरिचित रह रहा है।
- भारतीय परम्परा इन पृथकताओं का निषेध करती है वह जड़-चेतन सभी से अपनी रिश्ते स्थापित करती है। धरती 'माता' है चन्द्रमा मामा है पर्वत 'देवता' है, नदियां 'माता' है। समाज का हर व्यक्ति परस्पर जुड़ा हुआ है, यह संसार

परायेपन की जगह नहीं, यह 'वसुधा तो एक कुटुम्ब' है आदि विचार मानव को असम्बद्धता, पृथकता तथा द्वन्द्वशीलता के सम्बंधों से निजात दिलाते है।

- एकात्मता, समग्रता में निहित रहती है। समग्रता के अभाव में खण्ड दृष्टि से मानव आक्रांत होता है। जैसे ब्रह्माण्ड की समग्रता है, वैसे ही व्यक्ति की भी समग्रता है। व्यक्ति अर्थात केवल शरीर नहीं, उसके पास मन है, बुद्धि है और आत्मा भी है। यदि इन चारों में से एक की भी उपेक्षा हो जाये तो व्यक्ति का सुख विकलांग हो जायेगा। इन चारों के पृथक पृथक सुख से व्यक्ति सुखी नहीं होता, उसे तो एकात्म एवं धनीभूत सुख चाहिये। जिसे आनंद कहते है।
- वैसे ही समाज केवल सरकार नहीं है, उसकी अपनी संस्कृति है, जन एवं देश है। इन चारों के सम्यक संचालन के बिना समष्टि के सुख का संधान नहीं होता।
- इस प्रकार सृष्टि के पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, आकाश, प्रकाश व वायु) हैं, जिनके साथ न्याय-संगत व्यवहार होना चाहिये तथा अदृश्य किन्तु अनुभूति में आने वाले आध्यात्मिक तत्वों से भी योग्य साक्षात्कार होना चाहिये। तभी मानव सुखी होगा।
- व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि तथा परमेष्ठी से एकात्म हुआ मानव ही विराट पुरुष है। इसके पुरुषार्थ चतुर्यामी है 'धर्म, अर्थ काम और मोक्ष' ये पुरुषार्थ मानव की परिस्थति निरपेक्ष आवश्यकतायें हैं, इनकी सम्पूर्ति करना समाज व्यवस्था का काम है।

धर्म-अर्थात शिक्षा-संस्कार एवं विधि व्यवस्था

अर्थ-साधन पुरुषार्थ है। धर्मानुसार अर्थव्यवस्था, रोजगार, उत्पदान, वितरण एवं उपयोग आदि।

काम–'धर्माविरुद्धो कामोऽहम्' (जो धर्म के अविरूद्ध हैं, मैं वह काम हूँ – गीता) समस्त एषणायें इसके अन्तर्गत आती है, उनको सांस्कृतिक उपागम प्रदान करना संगीत एवं विविध कलाओं के माध्यम से एषणाओं को सकारात्मक बनाना। धर्म विरुद्ध काम पुरुषार्थ नहीं, वरन विकार है।

मोक्ष–परम पुरुषार्थ है, जब व्यक्ति अभाव व प्रभाव की कुण्ठाओं से मुक्त हो जाता है। अब इसे कुछ नहीं चाहिये 'विगतस्य कुण्ठः इति वैकुण्ठ।'

यह समस्त भारतीय विचार प्रवचनों का नहीं वरन राष्ट्रनीति एवं राजनीति का विषय होना चाहिये। इसके आधार पर देश की नीतियां बननी चाहिये।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

राष्ट्र का अधिष्ठान संस्कृति में ही होता है ।

भारतीय संस्कृति 'भूमि' को माता व 'जन' को संतान के रूप में देखती है । हम पहले ऐसे राष्ट्र हैं जिसकी कल्पना मातृ शक्ति के रूप में हुई । हमारे देश की राष्ट्र चेतना के विस्तार का विवरण हमारे पुराने साहित्यों में, वेदों में, अथर्ववेद में, ऋग्वेद में मिलेंगे। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में 63 श्लोकों की एक मालिका है, जिसमें इस धरती के साथ हमारा संबंध क्या है, का पूर्ण विवरण है।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या!

अर्थात् पृथ्वी मां का स्वरूप है और मानव उसका पुत्र।

अथर्ववेद के श्लोकों में राष्ट्र का वर्णन इस प्रकार हैः–

भद्र इछन्त ऋशयः स्वर्विदः ।।
तपो दीक्षां उपसेदुः अग्रे रुं ।
ततो राष्ट्र बलं ओजष्व जातम् ।।
तदस्मै देवा उपसं नमन्तु ।

अर्थात आत्मज्ञाणी ऋषियो ने जगत का कल्याण करने की इच्छा से सृष्टि के प्रारंभ में जो दीक्षा लेकर किया, उससे राष्ट्र का निर्माण हुआ। राष्ट्रीय बल और ओज भी प्रकट हुआ। इसलिए सब राष्ट्र के सामने नम्र होकर इसकी सेवा करें।

अथर्ववेद में विविधता को भी पहचाना गया। हमारे यहां भिन्न–भिन्न परंपराएं हैं और भिन्न–भिन्न पद्धतियां हैं और भिन्न–भिन्न

भाषाएं हैं, और भिन्न-भिन्न जगह है, कहीं जंगल है, तो कहीं हिमाच्छादित पर्वत हैं। हमारे राष्ट्रवाद का मर्म – 'भारत माता की जय' है। वेदों के अलावा वाल्मीकि रामायण में भी राष्ट्र के प्रति गहरी आस्था प्रकट की गई है। प्रसंग है – लंका विजय के बाद जब यह विषय आया कि क्यों न प्रभु राम अपनी सेना समेत वहीं रह जाएं। तब सोने की लंका दुनिया की संपत्ति की राजधानी थी। लंका कोई गरीब राष्ट्र नहीं था। लेकिन भगवान राम लक्ष्मण से कहते हैं, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी। अर्थात हमारी जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी है। राष्ट्र की संकल्पना का यह पुरातन साहित्य विश्व में और कहीं नहीं मिलेगा।

विष्णुपुराण में भी राष्ट्र की एक संकल्पना है,

''उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं,
वर्ष तद भारतं नाम भारती यत्र संततिः,''

अर्थात हिमालय के दक्षिण की ओर, समुंद्र के उत्तर की ओर यह एक सम्पूर्ण भारत राष्ट्र है। यह अभिकल्पना दो सौ साल की नहीं है। वेद व्यास जी ने इसे 5000 वर्ष पहले ही लिखा था। यह हमारी जीवंत धारा है,। परंपराओं पद्धतियों और पूजा के माध्यम से, तीर्थयात्राओं के माध्यम से इस राष्ट्र के प्रति एक सम्पूर्ण पवित्रता का जागरण समाज ने किया। भारत की सांस्कृतिक एकता एवं तद्जनित राष्ट्रीयता, नकारात्मक नहीं वरन् विधायक है। आज भी किसी कर्मकांड या अनुष्ठान के लिए हम संकल्प लेते हैं तो भारत राष्ट्र का महातम्य और भौगोलिक स्थिति का स्मरण जरूर करते हैं–

हरि ओम .... वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशांतितमे कलियुग कलि प्रथम चरणे।

जम्बू द्वीपे भरत खण्ड भारत वर्षे आर्या वर्तान्तर्ग देशैक पुण्यक्षेत्र षष्टि संवतसराणां..............।

आर्थात् जम्बूद्वीप बहुत ही विशाल भूभाग है, उसके दक्षिणार्ध में 6 विभागों वाला भरत खण्ड है उसके लगभग एक खण्ड में आर्यावर्त अथवा वर्तमान भारतवर्ष है। यही नहीं महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथ पूरे भारत का भौगोलिक परिचय दिग्विजय वर्णन, तीर्थयात्रा वर्णन एवं स्वयंवर वर्णन के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। कोई भी अन्य सभ्यता या साहित्य अपने देश के बारे में ऐसा प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती।

हम अखंड भारत के उपासक हैं। दीनदयाल जी कहते हैं 'अखंड

भारत हमारे लिये राजनैतिक नारा नहीं वरन् हमारी श्रद्धा का विषय है। बंगाल के प्रमुख साहित्यकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय अपने उपन्यास आनन्दमठ में सन् 1882 में जिस वन्दे मातरम् गीत को सम्मिलित किया था वह आगे चलकर पूरे स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान देश का मुख्य गीत बन गया। अवनींद्रनाथ टैगोर ने भारतमाता को चारभुजाधारी हिन्दू देवी के रूप में चित्रित किया जो केसरिया वस्त्र धारन किये है और अपने हाथ में पुस्तक, माला, श्वेत वस्त्र तथा धान की बाली लिये हुए है।

स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र को परिभाषित करते हुए कहा था– A nation is a soul, a spiritual principle. Two things, which in truth are but one, constitute this soul or spiritual principle. One lies in the past, one in the present. One is the possession in common of a rich legacy of memories; the other is present-day consent, the desire to live together, the will to perpetuatethe value of the heritage that one has received in an undivided form

यानी राष्ट्र एक आत्मा है! एक आध्यात्मिक सिद्धांत है! वास्तव ये दोनों बातें एक ही हैं। जो आत्मा और आध्यात्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन करती हैं। एक हमारे अतीत से जुड़ा हुआ है, और दूसरा वर्तमान है। एक हमारी समृद्ध स्मृतियों की धरोहर है और दूसरा सह अस्तित्व और अखंडित विरासत के मूल्यों साथ रहने की इच्छाशक्ति की सहमति है।

इसके उलट पश्चिम में राष्ट्र की कल्पना पितृ शक्ति के रूप में है। पश्चिम के देशों में न तो ऐसी कोई संकल्पना है और इस प्रकार का कोई इतिहास नहीं है जिसके आधार पर हम अपने देश का विश्लेषण कर सकें। पश्चिम में राष्ट्र राज्य की परिकल्पना रही है और इस परिकल्पना का प्रारंभिक इतिहास ही विवादित रहा है। क्योंकि इसके साथ एक सैद्धांतिक सवाल जुड़ा है – पहले अस्तित्व में कौन आया, देश या राष्ट्र राज्य? देश की संप्रभुता के लिए राष्ट्रवादी आंदोलनों की जो आवाजें उठी, उसी को पूरा करने के लिए राष्ट्र राज्य बनाया गया। यानी देश के भीतर ही कई देश।

अमेरिका एक राष्ट्र-राज्य है, लेकिन इसका इतिहास क्या है? ब्रिटेन या यूनाइटेड किंगडम या इंग्लैंड में भी अगर राष्ट्र-राज्य की

कल्पना है तो उसका क्या इतिहास है? जर्मनी का भी राष्ट्र–राज्य की संकल्पना है। इटली भी इसमें शामिल हैं पर चार–पांच सौ साल पहले का इनका कोई ऐसा साहित्य उपलब्ध नहीं है। जबकि हमारे साहित्य और जीवन मूल्यों का इतिहास पांच हजार साल से भी पुराना है। इसलिए भारत, भारत के राष्ट्रवाद के बारे में जो संकल्पना हमारी है उसका उदाहरण न अमेरिका हो सकता है, न इंग्लैंड हो सकता है, न जर्मनी हो सकता है, न इटली हो सकता है।

अंग्रेजों का दुष्प्रचार –''भारत पर आर्यों का आक्रमण''

इस पर डॉ.अम्बेडकर ने लिखा है –The language in which reference to the seven rivers is made in the Rig Veda is very significant- No foreigner would ever address a river in such familiar and endearing terms as 'My Ganga, my Yamuna, my Saraswati', unless by long association he had developed an emotion about it- In the face of such statements from the Rig Veda] there is obviously no room for a theory of a military conquest by the Aryan race of the non-Aryan races of Dasas and Dasyus-

ऋग्वेद में सातों नदियों के बारे में जिस भाव व भाषा में लिखा गया है वह काफी महत्वपूर्ण है। कोई भी विदेशी नदियों को मेरी गंगा, मेरी यमुना और मेरी सरस्वती जैसे आत्मीयता व श्रद्धा भाव से संबोधित नहीं कर सकता जब तक कि उसका इनके साथ लंबा संबध ना रहा हो और उनके प्रति भावनात्मक लगाव ना हो। ऋग्वेद के इस संदर्भ के बाद इस सिद्धांत के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता कि आर्यों ने भारत पर हमला कर गैर आर्यों को अपना दास बना लिया था।

गंगे! च यमुने! चौव गोदावरी! सरस्वति! नर्मदे! सिन्धु!
कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

आज भी हमारे यहां कहीं भी नदी में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते समय गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी का स्मरण करते हैं। जिससे स्पष्ट होता है कि हमारे वेदों में उन सभी प्रमुख नदियों का वर्णन है जो भारत वर्ष में बहती रही हैं।

वामपंथी इस यूरोपीय व्याख्या को स्वीकार कर भारत को बहु–राष्ट्रीय देश कहते थे। इसीलिये इस्लामिक मजहब के आधार पर

जब द्वि–राष्ट्र का नारा बुलंद हुआ, साम्यवादी लोग मुस्लिम लीग के साथ थे। भारत की सांस्कृतिक एकात्मता पर मजहबी एवं साम्राज्यवादी राजनीति ने आघात किया एवं भारत का दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन हुआ ।

हमें आत्म–विस्मृत करने के लिए अंग्रेजों ने यह प्रचारित किया कि हम कभी राष्ट्र थे ही नहीं। वे हमारे देश को Nation in Making की संज्ञा देते थे। उनके अनुसार भारत राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में है। भारत एक देश एवं एक जन नहीं वरन् बहुभाषी, बहुधर्मी एवं बहुसंस्कृति वाला उपमहाद्वीप है। पाश्चात्य जगत ने सांस्कृतिक राष्ट्र के स्थान पर 'राष्ट्र–राज्य' की कल्पना प्रस्तुत की जिसने विश्व को दो महायुद्ध, उपनिवेशवाद एवं अखंड वैश्विक अशांति प्रदान की।

'राष्ट्र–राज्य' अवधारणा ने पश्चिम को भी कलहकारी राजनैतिक सत्ताओं में बांट रखा है। द्वितीय महायुद्ध के बाद सकारात्मक यूरोपीय राष्ट्रवाद कुछ जोर मार रहा है। महायुद्धों के कड़वे अनुभवों के बाद अब वे यूरोपीय संसद, यूरोपीय बाजार एवं यूरोपीय मुद्रा का निर्माण कर रहे हैं। 'राष्ट्र–राज्यों' में विभक्त यूरोप को 'भू–सांस्कृतिक राष्ट्र' बनने में अभी समय लगेगा। यही स्थिति 'अरब राष्ट्रवाद एवं 'अफ्रीकन राष्ट्रवाद' की है। ये राष्ट्रवाद अभी केवल नारों में है, धरती पर अभी साकार नहीं हुये हैं। भारत में एक शक्तिशाली भू–सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का निर्माण कर विश्व शांति यानी 'वसुधैव कुटुम्बकम' को साकार करने वाला वैश्विक अभियान हमें चलाना होगा। तभी विश्व इस विधायक विचार को समझेगा।

राष्ट्र की आत्मा चिति

दीनदयाल उपाध्याय जी कहा करते थे– किसी भी कार्य के गुण–दोषों का निर्धारण करने की शक्ति अथवा मानक चिति शक्ति है। प्रकृति से लेकर संस्कृति तक में उसका सर्वव्यापक प्रभाव है। उत्थान, प्रगति और धर्म का मार्ग चिति है। चिति सृजन है और उसके आगे विनाश ही है। चिति ही किसी भी राष्ट्र की आत्मा है जिसके सम्बल पर ही राष्ट्र का निर्माण संभव है। चिति विहीन राष्ट्र की कल्पना व्यर्थ है। वही एक शक्ति है जो मार्ग प्रशस्त करती है श्रध्दा और संस्कृति का। राष्ट्र का हर नागरिक इस चिति के दायरे में आता है। इतना ही नहीं, राष्ट्रीय हित से जुड़ी

संस्थाएं भी इसी चिति के दायरे में आती हैं। कोई भी समाज किसी बात को श्रेष्ठ अथवा अश्रेष्ठ क्यों मानता है? जो 'चिति' के अनुकूल हो वो श्रेष्ठ अर्थात् संस्कृति, जो चिति के प्रतिकूल हो वह अश्रेष्ठ अर्थात विकृति। यह चिति जन्मजात होती है, इसके उत्थान–पतन से राष्ट्रों का उत्थान–पतन होता है। अपनी 'चिति' के विस्मरण ने हमें दूसरों का गुलाम बनाया, चिति के पुनः स्मरण ने आजादी दिलाई।

इकबाल ने कहा–

यूनान मिस्र रोमां, सब मिट गये जहां से ।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।।

स्वस्थ समाज की शक्ति – 'विराट'

यह समाज की अन्तर्निहित एवं प्रतिरोधक शक्ति है। समाज के समस्त घटकों का जन्म 'विराट' से ही होता है। घटकों में पृथकता का भाव 'विराट' को शिथिल करता है । सांस्कृतिक राष्ट्र की नियामिका शक्ति है 'चिति' एवं 'विराट'। जागृत चिति एवं शक्तिशाली विराट राष्ट्र का नियोजन एवं संर्वधन करते हैं।

स्वराज्य एवं सुराज्य

यदि संस्कृति का विचार न हो तो स्वतंत्रता की लड़ाई स्वार्थी एवं सत्ता पिपासा की लड़ाई बन जायेगी। सत्ता पिपासा ने ही भारत की स्वातंत्र्य समर को विपथगामी बनाया और हम विभक्त हो गये। साम्राज्यवादी सत्तातंत्र ही स्वदेशी हाथों से संचालित होता रहा है। इसे सही अर्थो में स्वराज्य एवं सुराज्य बनाना है।

विविधता में एकता

हम एक देश, एक जन तथा एक संस्कृति हैं। भारत की संस्कृति **'एकम् सत् विप्राः बहुधा वदन्ति'** के अधिष्ठान पर विकसित हुई है। यहां विविधता समाज के षृंगार का नियामक है, विघटन का नहीं। भारत के सभी पंथ, जाति, भाषा, कला एवं संगीत भारतीय संस्कृति के भिन्न भिन्न अभिव्यक्ति है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अधिष्ठान पर राष्ट्र नायक अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत भूमि का वर्णन इस प्रकार किया है।

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्र पुरूष है।
हिमालय इसका मस्तक एवं गौरी शंकर शिखर है।
कश्मीर किरीट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।

विंध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है।
पूर्वी और पश्चिमी घाट, दो विशाल जंघायें हैं।
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
पावस के काले काले मेघ, इसके कुंतल केश हैं।
चांद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं।
यह वंदन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है।
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर –कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है।

मिश्रित संस्कृति का विचार द्विराष्ट्रवाद एंव बहुराष्ट्रवाद को पुष्ट करता है, अतः यह वर्ज्य होना चाहिये। रसखान, अब्दुर्रहीम खानखाना, मौलाना दाउद, कुतबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी, नजरूल इस्लाम तथा कवि मीर तकी आदि मुस्लिम महापुरूषों की एक शृंखला है जो भारत की एकात्म संस्कृति के वाहक है। आधुनिक काल में भी श्रीमती एनीबेसेंट, जमशेद जी टाटा, न्यायमूर्ति मोहम्मद करीम छागला, पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व मौलाना वहिदुद्दीन खान भी इसी श्रेणी में आते हैं।

कार्यकर्ता व्यक्तित्व विकास

- हमारी पार्टी 'कार्यकर्ता आधारित जन संगठन है।' कार्यकर्ताओं का समुचित विकास ही, स्वस्थ नेतृत्व की गारंटी है।
- सत्तावादी राजनीति कार्यकर्ताओं को परस्पर स्पर्धी बना देती हैं। इससे कार्यकर्ताओं के संस्कारों का क्षय एवं विचारों का वर्धन होता है। भाजपा का कार्यकर्ता परस्पर सहयोगी है, जिस महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हमारा संगठन बना है, उसे कार्यकर्ताओं की सामूहिकता एवं टीम भावना से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- अतः कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हो, उदाहरण स्वरूप व्यवहार हो तथा उसे समाजशास्त्र व मनोविज्ञान की समुचित जानकारी हो, इसकी व्यवस्था होनी चाहिये।
- कार्यकर्ता के विकास में दायित्व के निर्वहन की निर्णायक भूमिका होती है। इसलिये हर कार्यकर्ता के लिये संगठन में काम होना चाहिये तथा हर काम के लिये कार्यकर्ता उपलब्ध होना चाहिये।
- पूर्व योजना एवं पूर्ण योजना की बैठकें कार्यकर्ता की चिन्तन प्रक्रिया एवं निर्णय प्रक्रिया को चालना देती है। अतः हर कार्यक्रम के बाद समीक्षा बैठक होनी चाहिये इससे कार्यकर्ता में आत्मालोचन का भाव जगता है।
- हर कार्यकर्ता कहीं न कहीं टीम का हिस्सा हो तथा कुछ न कुछ उसको स्वतंत्र दायित्व हो, इससे उसमें सामूहिकता एवं नेतृत्व के गुणों का विकास होगा।

- हम 'जनसंगठन' हैं कार्यकर्ता को जनाभिमुख होने के पर्याप्त अवसर होने चाहिये। आमसभाओं व नुक्कड़ सभाओं को सम्बोधित करना, आंदोलनों को संचालित करना आदि।
- अध्ययन का कोई विकल्प नहीं है। कार्यकर्ता को अध्ययन के लिये प्रेरित करना तथा अध्ययन की व्यवस्था करना जरूरी है। कार्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था कार्यकर्ता के विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।
- जिज्ञासा, सहिष्णुता, सामूहिकता एवं सक्रियता कार्यकर्ता के व्यक्तित्व विकास की कुंजी है।

मीडिया प्रबंधन

मीडिया से संबंधों को लेकर आमतौर पर एक जुमला प्रचलित है– मीडिया मैनेजमेंट। यह मीडिया को नापसंद है। वह ऐसा दिखना चाहता है कि वह किसी से मैनेज नहीं होता। हालांकि सच ऐसा नहीं है। जैसे आजकल लायजनिंग व लाबिंग के लिए जुमला चला है एडवोकेसी। कुछ उसी तरह।

फिर भी, हमें सावधानी बरतते हुए आपसी संवाद में भी इस जुमले से परहेज करना चाहिए। इसकी बजाए, इसके लिए एक सम्मानजनक जुमला है, मीडिया रिलेशंस यानी मीडिया से संबंध, संपर्क।

वैसे अगर मीडिया मैनेजमेंट की विवेचना करें तो उसमें से निकलती खबरें प्लांट करना, अपने विरोधियों के खिलाफ। या फिर, किसी प्रतिकूल परिस्थिति में मीडिया से अनुनय–विनय कर अपने विरोध में छप रही खबरें रुकवाना।

उसके स्थान पर दूसरा है, इस स्थिति की नौबत ही नहीं आने देना। अगर मीडिया में हमारे मधुर संबंध होंगे तो हमारे विरुद्ध कोई खबर प्लांट नहीं होगी। अगर हो रही होगी, तो रिपोर्टर या संपादक स्वयं आपको बता देंगे। यहां तक कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आपका पक्ष जाने बिना वे कोई खबर नहीं छापेंगे।

लेकिन हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि ये संबंध बनने में समय लगता है। कई बार तो बरसों भी लग जाते हैं।

दूसरी बात यह भी कि अगर कोई घटना घटित हुई है तो वह छपेगी या दिखेगी ही। कोई भी नकारात्मक घटना तो अवश्य ही छपेगी अथवा दिखेगी। उससे यह नहीं मान लेना चाहिए कि मीडिया हमारे विरुद्ध है।

इसीलिए कहा जाता है कि Action is the best spokesperson- यानी हमारे कर्तृत्व ही हमारे प्रवक्ता हैं।

मीडिया के बारे में मिथक

अक्सर कहा जाता है कि मीडिया बिकाऊ है। पर यह उतना सच नहीं है। मीडिया का बड़ा वर्ग बिकाऊ नहीं है। हम यह कह सकते हैं कि वह बौद्धिक रूप से ईमानदार नहीं है, लेकिन वित्तीय रूप से अभी भी अधिकांश लोग बिकाऊ नहीं हैं।

मालिक के स्तर पर या कहीं–कहीं संपादक के स्तर पर किन्हीं वर्गों के साथ सौदेबाजी हो जाती है, लेकिन अक्सर पत्रकारों के स्तर पर ऐसा नहीं होता।

सवाल उठ सकता है कि फिर हमारे खिलाफ इतनी खबरें क्यों छपती हैं।

इसका एक व्यवहारिक पक्ष यह है कि हम या तो पत्रकारों के साथ संबंध बनाते नहीं या फिर संबंध व्यक्तिगत होकर रह जाते हैं, पार्टी के लिए नहीं बनाए जाते।

अपना विचार–परिवार इतना बड़ा, इतना महत्वपूर्ण हो गया है कि अखबारों को, टीवी चैनलों को उसके बारे में, महत्वपूर्ण घटनाओं पर पार्टी के रुख के बारे में खबरों की लगातार आवश्यकता बनी रहती है। लेकिन पार्टी के बारे में सूचना के अभाव में अथवा उसके क्वोट के अभाव में पत्रकारों को अक्सर वैक्यूम में काम करना पड़ता है। वे कयास लगाने पर मजबूर हो जाते हैं, अथवा पार्टी में ऐसे स्रोतों से बात कर लेते हैं जो उन्हें आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। और अगर वह भी न मिले तो मनगढ़ंत कहानियां बना देते हैं। और यह सब तो किसी भी पार्टी के बारे में सत्य है। इसलिए वैक्यूम छोड़ने के नफा–नुकसान को तौल लेना आवश्यक है। मगर उसके बारे में मीडिया से शिकायत नहीं का जा सकती।

मीडिया के बारे में अक्सर यह माना जाता है कि वह संघ परिवार विरोधी है। वास्तव में ऐसा नहीं है। जहां मीडिया के साथ सतत्

संवाद बना रहा है, वहां उसका संघ परिवार से विरोध नहीं है। अंग्रेजी मीडिया में भी संवाद से स्थिति सुधर सकती है।

लेकिन अंग्रेजीदां माहौल में पढ़ाई, पालन-पोषण के कारण भारतीय मूल्यों में उनमें से कईयों का कोई विश्वास नहीं है। ऐसे में उन्हें संघ परिवार को समझने में कठिनाई होती है। उसके लिए बहुत मेहनत की और रणनीति की आवश्यकता है।

हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का मीडिया तो जमीनी वास्तविकताओं से जुड़ा होने के कारण परिवार के करीब है।

मीडिया के मन में संघ के बारे में मिथक

मीडिया के मन में धारणा बैठी हुई है कि विचार परिवार अल्पसंख्यक-विरोधी है। इस धारणा के लिए वामपंथी विचारधारा जिम्मेदार है जो 1950 के दशक से ही मीडिया पर कब्जा किए बैठी है।

मीडिया के मन में यह भी धारणा है कि अपना विचार-परिवार महिला-विरोधी है। इसके लिए भी वामपंथी जिम्मेदार हैं। और इस समय खासतौर पर जब मीडिया में महिलाओं की संख्या काफी अधिक है, वे इस धारणा को पुष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मीडिया संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए क्या करें

Accessibility

अपनी उपलब्धता बढ़ाना। अनौपचारिक बातचीत प्रेस कांफ्रेंस से कहीं बेहतर होती है। कभी-कभी उन्हें अपने कार्यालय में भोजन के लिए आमंत्रित करना। कभी उनके स्वयं से घर जाने की इच्छा जाहिर करना।

- हमेशा यह याद रखना कि मीडिया वैक्यूम में काम नहीं कर सकता। इसलिए सतत् संवाद बनाए रखना ही सर्वोत्तम उपाय है।
- अपनी खबर न छपने पर अथवा अपने विरोध में खबर छपने या दिखाए जाने पर नाराजगी जाहिर न करना। फिर भी संबंध बनाए रखना।
- मीडिया में अपने विरोधियों को भी गले लगाना
- विचारधारा से संबंधित विषयों पर मीडिया से अनौपचारिक बातचीत होते रहना।
- किसी भी महत्वपूर्ण घटना के संदर्भ में हमें तथ्यों के साथ हमेशा तैयार रहना चाहिए।
- हमें स्वयं ही किसी खबर को अपने पक्ष में एंगल देने की कला अपनानी होगी। वामपंथी ऐसा ही किया करते हैं। ऐसा करते वक्त यह याद रखना होता है कि अखबार व टीवी वालों की अपनी डेडलाइन होती है, उन्हें खबर सही वक्त पर देना ही अपने हित में है।
- हमें समाचार एजेंसियों की महत्ता को भी स्वीकार करना होगा। वे दिखती नहीं हैं, लेकिन दिन में ही किसी भी खबर को बढ़ाने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम होती हैं।
- किसी भी अखबार घ चैनल का डेस्क बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी होती है। हमारा उनकी तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

मीडिया में नए ट्रेंड

मीडिया और उपभोक्तावाद का चोली-दामन का साथ है। वे एक दूसरे को बढ़ावा देते हैं।

मीडिया, उपभोक्तावाद की बदौलत ही फलता-फूलता है। इसलिए वह बाजार के हितों की अनदेखी नहीं करेगा। इन सीमाओं में ही हमें काम करना होगा।

टीवी ने सबसे पहले खबर ब्रेक करने का जो ट्रेंड चलाया है उसमें अधपकी खबरों को चलाने की भी होड़ होती है। अगर वे पूरी तरह गलत हैं तो हमें तत्काल चैनल हैड से बात करनी चाहिए वरना, उन पर प्रतिक्रिया करने से बचना चाहिए।

मीडिया का मानना है कि सनसनीखेज खबरें ही बिका करती हैं, इसलिए खबरों को ज्यादा सनसनीखेज बनाने की होड़ लग गई है। इसके खिलाफ समाज में ही वातावरण बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय मीडिया बनाम क्षेत्रीय मीडिया

राष्ट्रीय मीडिया आज भी पाश्चात्य संस्कारों में ढला हुआ है।

क्षेत्रीय मीडिया जमीनी वास्तविकताओं के नजदीक है। इसलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमें क्षेत्रीय स्तर पर उसे ज्यादा महत्व दें।

खबरें ब्रेक करने में उसकी मदद करें। उसका प्रचार-प्रसार तभी होगा जब उसे एक्सक्लूसिव खबरें मिल सकेंगी।

एक्सक्लूसिव खबरें किसी भी पत्रकार के करियर के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। अगर हम उसमें मदद नहीं करेंगे तो वह किसी

और की मदद लेगा अथवा अपनी कल्पनाओं की या अधपकी जानकारी की। बेहतर है, हम अपने अनुकूल एंगल के साथ उसकी मामूली जानकारी को भी एक्सक्लूसिव बना दें। इसमें अपनी पार्टी का इतिहास जानना बहुत मददगार होता है। पचास साल पुरानी कोई भी संबंधित घटना का उल्लेख यह काम बखूबी कर सकता है। या किसी मौके पर दीनदयालजी अथवा अटलजी का कोई वक्तव्य या ऐसा ही कोई प्रसंग।

दुर्भाग्यवश, बाजार के प्रभाव में, और उसी के कारण, तहसील स्तर के अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं अब ब्लैकमेलिंग के धंधे में लिप्त हो गए हैं। इसके लिए सामाजिक जागरूकता की जरुरत है। इस सम्बन्ध में हमें मीडिया से नहीं उलझना चाहिए। ऐसे विषयों पर किसी प्रतिष्ठित मंच से संगोष्ठी आदि के कार्यक्रम रखना उपादेय है।

राजनीतिक कार्यो में सोशल मीडिया का प्रयोग

क्या है सोशल मीडिया?

मोटे तौर पर देखें तो मीडिया संवाद अदायगी का एक माध्यम है। जहां तक सोशल मीडिया की बात है तो यह कंप्यूटर और इंटरनेट आधारित एक ऐसा मंच है जिस पर एक साथ कई लोगों के बीच संवाद का आदान-प्रदान, सूचना भेजने या मंगाने, फोटो या वीडियो के आदान-प्रदान और सामूहिक विचार विमर्श का एक मंच है।

सोशल मीडिया वेबसाइट्स के जरिए सामाजिक संवाद का आज सबसे सशक्त माध्यम है। इसका उपयोग कहीं भी कभी भी कर सकते हैं। इसके लिए ना तो किसी नियत समय की आवश्यकता है और न किसी नियत स्थान की। यानी 365 दिन और 24 घंटे सोशल मीडिया से जुड़े रह सकते हैं। वैसे तो सोशल मीडिया के हजारों साइट्स उपलब्ध हैं, लेकिन उनमें कुछ बेहद लोकप्रिय और उपयोगी हैं।

कुछ ख़ास सोशल मीडिया के साइट्स

- **फेसबुकः** सोशल साइट्स की सूची में फेसबुक आज सर्वाधिक लोकप्रिय व उपयोगी साइट है। यह पूरी तरह से निःशुल्क हैं। एक बार इस पर रजिस्ट्रेशन कराने के बाद कोई भी अपना एक्सलूसिव प्रोफाइल बना सकता है। जिस पर वह अपने बारे में, अपने पेशे के बारे, पारिवारिक पृष्ठभूमि,

अपनी पसंद और राजनैतिक निष्ठा के बारे में लोगों को बता सकता है। इसके अलावा एक साथ कई लोगों को संदेश भेजने के साथ सीधे लिपि में बातचीत भी कर सकता है। फेसबुक अपने बारे में राय बनाने और अपनी योजनाओं से लोगों को जोड़ने का भी बड़ा मंच है। आजकल हर महत्वपूर्ण राजनेता या समाज सेवक अपने फेसबुक के जरिए अपने प्रशंसकों से अपने लिए लाइकिंग के विकल्प के जरिए प्रमुख मीडिया में भी जगह पाता है।

- **ट्विटरः** सोशल मीडिया का यह मंच राजनीति में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर चुका है। ट्विटर भी एक निःशुल्क सोशल मीडिया मंच है जिसके जरिए त्वरित गति से कम शब्दों में पलक झपकते ही किसी घटना या सूचना पर प्रतिक्रिया व्यक्त की जा सकती है। आजकल ट्विट्र शासन-प्रशासन के लिए भी लोगों तक तुरंत सूचना पहुंचाने का माध्यम बन गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन उन लोगों में हैं जिनके ट्विट्र प्रशंसकों की संख्या करोड़ों में है। ट्विट का उपयोग समाचार पत्र और मीडिया चैनल भी धड़ल्ले से कर रहे हैं। एक बार ट्विटर अकाउंट खोलने के बाद आप जितनी बार चाहे ट्विट कर सकते हैं या किसी और के ट्विट पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं।
- **गूगल+ः** इसे हम गूगल प्लस कहते हैं। यह एक ऐसा सोशल मीडिया मंच है जिसके जरिए ऑफलाइन भी संवाद स्थापित किया जा सकता है। यह मंच खासकर एक समूह या एक परियाजना से जुड़े लोगों के बीच संवाद का माध्यम है।
- **व्हाट्सअपः** एंड्रायड या स्मार्ट फोन के जरिए एक दूसरे से निरंतर सूचना संदेश का सबसे मजबूत और लोकप्रिय सोशल मीडिया अप्लीकेशन है व्हाट्सअप। यह अप्लीकेशन न सिर्फ आपसी संवाद का मंच है, बल्कि इसके जरिए श्रव्य और दृश्य यानी अंग्रेजी में कहे तो वॉयस व वीडियो के भी त्वरित आदान प्रदान का माध्यम है। आज व्हाट्सअप के जरिए देश की युवा पीढ़ी ही नहीं जुड़ी है, बल्कि पेशेवर, कलाकार, व्यापारी और राजनेता भी बड़े स्तर पर जुड़े है। यह अप्लीकेशन सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि दस्तावेजों के आदान-प्रदान और सामूहिक वाद-विवाद का भी मंच है। व्हाट्सअप के जरिए किसी से बातचीत भी की जा सकती है।

भारत में सोशल मीडिया के लिए आवश्यक तकनीक की पहुंचः-

- संचार क्रांति का लाभ संवाद अदायगी में भी मिला है। भारत जैसे देश में अब यह तकनीक सबकी पहुंच में है और सबके लिए उपयोगी है।
- देश की 20 फीसदी आबादी यानी 25 करोड़ लोग आज इंटरनेट का इस्तेमाल सूचना के आदान प्रदान के लिए कर रहे हैं।
- लगभग 96 करोड़ मोबाइल फोन उपभोक्ता हैं।
- भारत के लगभग 11 करोड़ लोग फेसबुक से जुड़े हैं।
- तीन करोड़ लोग ट्विटर का प्रयोग कर रहे हैं।

सोशल मीडिया के इस्तेमाल का लाभ

- राजनीतिक क्षेत्र में काम कर रहे लोगों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग बहुत ही लाभकर है। क्योंकि यह पूरी तरह निःशुल्क प्राप्त सुविधा है।
- इसके जरिए एक बहुत बड़े वर्ग तक पहुंचा जा सकता है।
- अन्य पारंपरिक संवाद माध्यमों के साथ ही इसका उपयोग किया जा सकता है।
- अपने लक्षित समूह तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए हमेशा लोगों के बीच बने रह सकते हैं।
- इससे जरिए तुंरत प्रतिक्रिया प्राप्त की जा सकती है।
- सोशल मीडिया का उपयोग कहीं भी, कभी भी यानी 365 दिन 24 घंटे किया जा सकता है। इसके लिए कोई खास जगह होने की कोई अनिवार्यता नहीं है।

सोशल मीडिया की जरूरत क्यों?

- सोशल मीडिया पक्षपात या राग द्वेष के आधार पर काम नहीं करता। जबकि मुख्य मीडिया, पत्र-पत्रिकाएं या मीडिया

चैनल पक्षपात हो सकते हैं।

- लोग यह पंसद करते हैं कि सूचनाएं या संवाद उनकी उंगलियों पर हो।
- सोशल मीडिया आज की युवा पीढ़ी की सोंच को परिलक्षित करता है। 2014 का आम चुनाव और बाद में राज्यों में हुए चुनाव परिणाम में सोशल मीडिया की बड़ी भूमिका रही है।

सोशल मीडिया के लिए रणनीति

- सबसे पहले यह खुद तय करना होगा कि अगले छह माह या एक साल के लिए सोशल मीडिया के जरिए क्या लक्ष्य हासिल करना है।
- अपने लिए प्रशंसकों का एक बड़ा आधार तैयार करना या जनता के साथ जुड़ना जैसे विकल्प हो सकते हैं।
- कुछ विशेष वर्ग या संख्या के साथ जुड़ना और अपनी छवि बनाना भी विकल्प हो सकता है।
- सोशल मीडिया के जरिए खुद को किसी विषय विशेष के विशेषज्ञ में स्थापित किया जा सकता है।
- लोगों को अपने वेब साइट्स की ओर आकर्षित किया जा सकता है।
- इन सबके पहले खुद भी यह तय करना जरूरी है कि सोशल मीडिया के उपयोग का उद्देश्य क्या है? इससे आखिर हासिल क्या करना है?

सोशल मीडिया के लिए विषय नियोजन आवश्यक

सोशल मीडिया में अपने बारे में या अपने लक्ष्य के बारे में सूचना डालने से पहले विषय नियोजन भलीभांति करना आवश्यक है। इस विषय नियोजन के लिए कुछ चुने हुए लोग या विशेषज्ञों के साथ गंभीर विचार मंथन किया जाना चाहिए। इसमें भाजपा के वरिष्ठ नेताओं या पार्टी के बेव साइट्स का सहयोग ले सकते हैं।

सावधानियां

कुछ भी और कैसी भी सामग्री सोशल मीडिया पर डालने से बचना जरूरी है। भाषाई संयम और उपमाओं पर सावधानी भी जरूरी है। सोशल मीडिया मंच पर ऐसा कुछ नहीं आना चाहिए जिससे आपकी छवि को नुकसान पहुंचे। किसी भी स्थिति में पार्टी की गरिमा को ठेस ना पहुंचे।

भाजपा से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण वेब लिंक इस प्रकार हैंः

1. What'sApp No.: 9650000272
2. BJP Website: www.bjp.org
3. BJP Facebook Page: www.facebook.com/BJP4India
4. BJP Twitter Account: www.twitter.com/bjp4india
5. BJP YouTube Channel (For videos): www.youtube.com/user/BJP4India
6. Flicker (For photos): www.flickr.com/photos/bjp4india
7. **BJP Official APP:**

a. Android: https://play.google.com/store/apps/details?id=com.bjp

b. iOS : https://itunes.apple.com/in/app/bjp-for-india/id388956261?mt=8

GOVERNMENT LINKS:

1. Prime Minsiter's website: www.pmindia.gov.in
2. Website for feedback/suggestions to PM & Government: www.mygov.in
3. PM's Facebook page: www.facebook.com/PMOIndia
4. PM's Twitter account: www.twitter.comèpmoindia

LEADER'S PAGE

1. Sh. Narendra Modi:www.facebook.com/narendramodi
2. Sh. Amit Shah :www.facebook.com/AmitShah.Official

देश के समक्ष चुनौतियां

देश के सामने कई गम्भीर चुनौतियां हैं जिनमें कुछ बाहरी और कुछ आंतरिक बाहरी चुनौतियां पड़ोसी देशों से ज्यादा है, खासकर सामरिक दृष्टिकोण से चीन बड़ी चुनौतियां पेश कर रहा है। तो हमारी एकता, अखंडता एवं अर्थव्यवस्था पर पाकिस्तान लगातार चोट कर रहा है।

पड़ोस के देशों से अवैध घुसपैठ भी हमारी राजनीतिक व आर्थिक स्थिरता के लिए बड़ा खतरा है। यूरोप में जिस तरह से शरणार्थी के नाम पर तेजी से घुसपैठ हो रहा है, उससे भारत को सबक लेते हुए संभल जाना चाहिए। ऐसा कुछ देश या आतंकवादी संगठन जान बूझ कर सकते हैं ताकि हमारी जनसंख्या संतुलन बिगड़े और वे अलगाववाद को हवा दें। बंगाल की सीमा से लगे असम के कुछ हिस्सों में ऐसी ही स्थितियां उत्पन्न हो गई हैं।

पाकिस्तान से बड़ी मात्रा में आ रही नकली मुद्रा भी हमारे लिए बड़ी चुनौती है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था को सीधा खतरा है। हमारे पड़ोसी मुल्कों की सहायता से चलाए जा रहे हवाला रैकेट के प्रति भी सावधान रहना होगा। हाल ही में देशव्यापी छापों से यह रहस्य खुला कि देश के दुश्मन हवाला काराबारियों के जरिए हजारों करोड़ रुपये यहां से भेज रहे हैं। आतंकवादी समूहों, हवाला का कारोबारियों और कुछ देश विरोधी गैर सरकारी संगठनों के बीच सांठ गांठ के सबूत

सामने आए हैं। यह हमारी अर्थव्यवस्था को अस्थिर बनाने की साजिश है।

साइबर आतंकवाद का खतरा हमारे लिए बढ़ गया है। आज दुनिया उसी की मुट्ठी में है, जो पूरी तरह से वायु तंरगों पर नियंत्रण रखता है। चीन और अमरीका लगातार सेटेलाइट आधारित ऐसे-ऐसे यंत्रों का अविष्कार कर रहे हैं जिनके जरिए दूसरे देशों की हर गतिविधि पर नजर रखी जा सकती है। भारत को अमरीका के कम चीन से ज्यादा खतरा है, क्योंकि चीन हाल के वर्षों में कई बार हमारे वेबसाइट को हैक कर चुका है। चीन की आईटी कंपनियों पर अमरीका और यूरोप की जासूसी करने का भी आरोप लग चुका है। आने वाले दिनों में सूचना प्रौद्योगिकी को भी एक दूसरे पर हावी होने के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।

विदेशों से सहायता प्राप्त आतंकवाद संगठन, उनके आत्मघाती दस्ते और आतंकवाद के खड़े होते नये प्रारूप भी हमारे लिए खतरे की घंटी हैं।

देश में स्थाई विकास की योजना बने, इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी जनसंख्या वृद्धि का सही प्रबंधन करें। बिना किसी योजना या राजनीतिक कारणों से यदि हम जनसंख्या यूं ही बढ़ते रहने देंगे तो एक दिन स्थिति विस्फोटक हो जाएगी। देश में युद्ध की स्थिति बन जाएगी।

बाहरी चुनौतियां

- चीन और पाकिस्तान, दोनों के साथ हमारा सीमा विवाद है और ये दोनों पड़ोसी देश हमारे लिए सीमा व घरेलू मोर्चों पर परेशानियां खड़ी कर रहे हैं।
- चीन और पाकिस्तान दोनों परमाणु संपन्न देश हैं और इन दोनों ने एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरते भारत को चोट पहुंचाने के उद्देश्य से आपस में गहरे राजनयिक संबध स्थापित कर लिए हैं।
- दोनों में से कोई भी देश पहले परमाणु अस्त्र के इस्तेमान नहीं करने की घोषणा करने को तैयार नहीं है, जबकि भारत

इसके लिए वचनबद्ध है।

- पाक प्रायोजित आतंकवाद के कारण भारत में हजारों लोगों की जानें जा चुकी हैं और अभी भी हमारे देश में पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे सैकड़ों आतंकवादी मॉडल सक्रिय हैं। पूरा विश्व आज जान चुका है पाकिस्तान आतंकवादियों का उदग्म स्थल है और यहां से पूरी दुनिया में आतंकियों को भेज रहा है। भारतीय सीमा के आस पास आज भी पाकिस्तान आतंकवादी कैंप चला रहा है। वह दाउद इब्राहिम और टाइगर मेनन जैसे भारत विरोधी आतंकवादियों को न सिर्फ अपने यहां पनाह दे रहा है, बल्कि वह शांति प्रक्रिया के लिए हुए हर तरह के समझौते से मुकर जा रहा है।
- पाक प्रायोजित आतंकवाद मॉड्यूल पर सतकर्ता बरतने, 26/11 हमले के गुनहगारों को भारत लाने जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा चलाई जा रही आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने जैसी कई चुनौतियों के कारण भारत को काफी बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। हमारी राष्ट्रीय संपत्ति यूं ही जाया हो रही है।
- भारत द्वारा पाकिस्तान को लगातार आर्थिक सहयोग देने और मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा दिए जाने के बावजूद पाकिस्तान कभी भारत को यह दर्जा नहीं देता, जिसके कारण भारत का व्यापार बाधित होता है।
- चीन के साथ हमारा सीमा विवाद काफी समय से चला आ रहा है। ऐसा लगता है कि चीन इसे हल करने का इच्छुक ही नहीं है। यद्यपि 1962 के बाद भारत चीन सीमा पर कभी कोई गोली बारी नहीं हुई और ना ही कोई विशेष तनाव ही फैला, उसके बावजूद चीन लगातर हथियारों का जखीरा भारतीय सीमा पर इकट्ठा कर रहा है और हमेशा हमारे विरुद्ध एक प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाए हुए है। अभी हाल ही में लखवी के मामले में यूएनए में आए प्रस्ताव पर चीन ने पाकिस्तान का ही साथ दिया।
- यद्यपि भारत ने चीन के साथ हमेशा आर्थिक सहयोग की

भावना रखी, लेकिन चीन लगातार हमारी आर्थिक हितों को अनदेखा करता रहा, राजनयिक स्तर पर भी और हिंद महासागर के एक देश के रूप में भी।

- चीन लगातार अपनी नौसेना को मजबूत कर रहा है और भारत के सामुद्रिक हितों के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। यह हमारे लिए एक और बड़ी चिंता की बात है।
- चीन सीमा पर सड़कों को जाल बिछा कर एक तरह से पाकिस्तान और श्रीलंका को मदद कर रहा है। इससे हिंद महासागर में भारत के प्रभुत्व को कड़ी चुनौती मिल रही है।
- जब से केंद्र में भाजपा की सरकार आई है, तब से भारत सोची-समझी रणनीति के तहत नेपाल, भूटान, म्यामार, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी की इन देशों की यात्रा से एक उचित वातावरण भारत के पक्ष में बना है। भारत अब चीन और पाकिस्तान द्वारा संभावित खतरे से निबटने के लिए अपनी सुरक्षा और खुफिया स्रोतों को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम असरदार तरीके से उठा रहा है।

आंतरिक चुनौतियां

माओवाद

- पाकिस्तान और चीन से लगातार सहायता प्राप्त कर रहे माओवादी भारत के आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन गए हैं।
- माओवादियों द्वारा की गई हिंसा के कारण अब तक हजारें सुरक्षा बल के जवान और आम नागरिक मारे जा चुके हैं। भारत के लगभग 200 जिलों में फैले अतिवामपंथी विचारधारा के इन अतिवादियों के कारण देश का विकास अवरुद्ध हो रहा है।
- ये माओवादी अब पूर्वोत्तर राज्यों के उग्रवादी समूहों के साथ सांठ गांठ कर साझा हमले की कोशिश कर रहे हैं।
- पूर्वोत्तर में सक्रिय अलगाववादी संगठन म्यामार और बांग्लादेश

के अपने गुप्त ठिकाने से भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे हैं और उग्रवादी हमले का संचालन कर रहे हैं।

- जुलाई, 2015 ने भारत की सेना ने इन अलगाववादी संगठनों को मुंहतोड़ जवाब दिया और म्यामार में घुसकर इनसे बदला लिया और इनके ठिकाने ध्वस्त किए।

जबरन धर्मांतरण

- धन और बल के सहारे मसीही और जिहादी गतिविधियों चलकार देश की जनसांख्यिकी ढ़ांचे को बिगाड़ने का षडयंत्र भारत में कई वर्षो से चल रहा है। यह हमारे लिए एक गंभीर आंतरिक खतरा है।
- धर्मांतरण के खेल में देश के बाहर की एजेंसियां भी लगी हैं, जो मुक्त हाथ से धन का और गुंडों का प्रयोग कर रही हैं।
- जबरिया धर्मांतरण एक गंभीर विषय है, क्योंकि इससे हमारा भाईचारा और सामाजिक सौहार्द बिगड़ने की आशंका है।
- धर्मांतरण हमारे यहां राजनैतिक रूप से एक बेहद संवेदनशील मुद्दा है, क्योंकि भारत की कई राजनैतिक पार्टिया या तो धर्म परिवर्तन को बढ़ावा दे रही हैं, या फिर खामोश समर्थन दे रही हैं।
- हमारे कई राज्यों में धर्मांतरण इतना ज्यादा हुआ है कि वहां कि जनसांख्यिकी ढांचा पूरी तरह बदल गया है। ऐसे राज्यों के लोगों में आक्रोश और गुस्सा है जो कभी भी फट सकता है।

गैर सरकारी संगठनों का जाल

- भारत में हजारों ऐसे गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) सक्रिय हैं जिन्हें विदेशों से इस बात के लिए ही पैसा मिलता है कि वह यहां के माहौल को बिगाड़े, आर्थिक प्रगति में बाधा पहुंचाएं और खासकर वनवासी क्षेत्रों के लोगों को गुमराह करें।
- केंद्र की सत्ता में आने के बाद भाजपा ने इस मामले में एक कठोर निर्णय लेते हुए फोर्ड फाउंडेशन, ग्रीनपीस क्मयूनिलिज्म कॉमबैट जैसे 4000 एनजीओं को न सिर्फ काली सूची में डाला बल्कि यह भी निश्चित किया कि विदेशों से जिन एनजीओं को पैसे मिलते हैं उनके कामकाज पर गहरी नजर भी रखी जाए।
- इसके पहले कई ऐसी एनजीओ थी जिन्होंने देश की विकास परियोजनाओं को ही बाधित करने की चेष्टा की, उनमें बनवासी क्षेत्रों में सड़क निर्माण नहर निर्माण और खनिज संपदा तक पहुंचने का काम भी शामिल था। कोडई कनाल, उड़ीसा और पूर्वोत्तर राज्यों की परियोजनाओं का विरोध इसका ताजा उदाहरण है।

आर्थिक चुनौतियां

- वर्ष 2015 का सामाजिक-आर्थिक एवं जातिगत जनगणना सर्वेक्षण यह बताता है कि देश की एक बहुत बड़ी आबादी किस तरह से गरीबी की जिंदगी जीने को विवश है।
- 60 साल के कांग्रेस के शासन में 60 फीसदी से अधिक ग्रामीण आबादी बदहाली की स्थिति में है।
- देश की लगभग 75 फीसदी आबादी की मासिक आय 5000 रुपये से भी कम है।
- 30 फीसदी आबादी के लिए आज भी खेती ही एक मात्र जीविका का साधन है।
- परंतु 56 फीसदी ग्रामीण आबादी के पास आज भी कोई भूमि नहीं है।
- लाखों लोग भीख मांग कर गुजारा कर रहे हैं।
- 13 फीसदी से अधिक लोग आज भी कच्चे मकान में रहते हैं।
- 11 करोड़ लोग फटेहाली की स्थिति में हैं।

अर्थव्यवस्था से संबंधित सामाजिक मुद्दे

- भारत में कुपोषित महिलाओं और बच्चों की संख्या काफी अधिक है।
- प्रसव के दौरान मृत्यु की दर भी भारत में काफी अधिक है जो यह बताती है कि लोगों तक स्वास्थ्य सुविधाएं अभी भी

नहीं पहुंच रही हैं।

- भ्रूण हत्या एवं शिशु मृत्यु के कारण लैंगिक औसत में बालिकाओं की संख्या कम होती जा रही है। हरियाणा, पंजाब और उत्तरप्रदेश में यह औसत खतरनाक स्थिति तक पहुंच गई है।
- इस लैंगिक असंतुलन को दूर करने के लिए भाजपा ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं का अभियान चलाया है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं आज भी दूर की कौड़ी बनी हुई हैं।
- हमें यह ध्यान रखना होगा कि आधुनिकीकरण का मतलब पश्चिमीकरण नहीं है।
- वैश्वीकरण के नाम पर भारत के उद्योगों और यहां की परंपरा व संस्कृति को दाव पर लगाया जा रहा है।
- भारत को विदेशी सामानों का गोदाम बनाने के कारण हमारे परंपरागत उद्योग व लघु उद्योग खतरे में पड़ गए हैं।
- परंपरागत रूप से भारत के दस कुशल समुदाय जिन्हें हम सामूहिक रूप से विश्वकर्मा कहते थे और जिनमें बढ़ई, बुनकर, सुनार, लुहार, कुम्हार, चर्मकार, निर्माण मिस्त्री और ठठेरा कहते थे, उनके हाथ से काम छिन रहे हैं और अब वे किसी और रोजगार की तलाश में भटकने को मजबूर हो गए हैं। आवश्यकता है कि फिर से इन्हें प्रशिक्षित किया जाए और भारत सरकार के स्कील इंडिया कार्यक्रम में इन्हें शामिल किया जाए।

सामाजिक मुद्दे

- भाजपा सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए क्लीन इंडिया मिशन की शुरुआत की है।
- स्वच्छता के जरिए कई जानलेवा बीमारियों से हम बच सकते हैं।
- गंगा सफाई योजना हमारे देश के लिए गर्व की बात है।
- इस अभियान को देश की अन्य नदियों से जोड़ने की जरूरत है।

- हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक शहरों को अतिक्रमण और गंदगी से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।
- ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व के भवनों और स्थलों की सुरक्षा के प्रति स्थानीय लोगों को जागरूक करना आवश्यक है।
- देश के प्रत्येक नागरिक के लिए स्वच्छ जल पीने के लिए मुहैया हो
- हर घर बिजली और स्वच्छ पानी भाजपा सरकारों का लक्ष्य हो
- देश को शत प्रतिशत साक्षर बनाना भी भाजपा का लक्ष्य है।
- समस्याओं का समाधान सिर्फ कानून बना देने भर से नहीं हो सकता बल्कि इस पर असरदार तरीके से अमल और जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

वर्ग गीत

अरूण गगन पर महाप्रगति का, अब फिर मंगल गान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।।
सौरभ से भर गयी दिशायें, अब धरती मुसकाती है,
कण–कण गाता गीत गगन की, सीमायें दुहराती हैं,
मंगल गान सुनाता सागर, गीत दिशायें गाती हैं,
मुक्त गगन में राष्ट्र पताका, लहर लहर लहराती है,
तरूण रक्त अब लगा खौलने, हृदयों में तूफान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।। 1 ।।

रामेश्वर का जल अंजलि में, काश्मीर की सुन्दरता,
काम रूप की धूलि द्वारिका, की पावन प्यारी ममता,
बंग देश की भक्ति भावना, महाराष्ट्र की तन्मयता,
शौर्य पंचनद विजयी विश्व में, राजस्थानी प्रबल क्षमता,
केन्द्रित कर निज प्रखर तेज को, फिर भारत बलवान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा ।। 2 ।।

बिन्दु बिन्दु जल मिलकर बनती, प्रलयंकर जल की धारा,
कण–कण भू–रज मिल कर करते, अंधकारमय जग सारा,
कोटि–कोटि हम उठें उठायें, भारतीयता का नारा,
बढ़ें विश्व के बढ़ते कदमों ने फिर हमको ललकारा,
उठे देश के कण–कण से फिर जन–जन को आह्वान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।।
अरूण गगन पर महाप्रगति का, अब फिर मंगल गान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ले, सोया हिन्दुस्थान उठा।। 3 ।।

भारतीय जनता पार्टी
11, अशोक रोड, नई दिल्ली– 110001
फोन : 011–23005700, फैक्स : 011–23005787